कैमरे की नजर में साहित्य मेला–२००८

मुख्य अतिथि श्री रवीन्द्र गुप्ता को माल्यार्पण करते हुए विहिसा कार्यसमिति सदस्य कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव

विशिष्ट अतिथि श्री नरेश चन्द्र राजवंशी को माल्यार्पण करते हुए विहिसा कार्यसमिति सदस्य मो० अन्सार शिल्पी

पुर्व केन्द्रीय कैबिनेट सचिव श्री वेद प्रकाश कंवर को सम्मानित करते हुए मुख्य अतिथि व अन्य

डॉ० सुमी शर्मा को सम्मानित करती हुई सुश्री बी.एस. शांताबाई एवं अतिथि गण

भाभा अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिक अधिकारी कुलवंत सिंह को सम्मानित करते हुए अतिथि गण

विजय लक्ष्मी विभा को सम्मानित करते हुए डॉ० तारा सिंह, सुश्री बी.एस.शांताबाई, रवीन्द्र कुमार गुप्ता व गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

विश्व स्नेह समाज
लोकप्रिय हिन्दी सामाजिक मासिक पत्रिका
अप्रैल 2008
प्रधान सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ी.के. अग्रवाल, ब

अपहरण... ?

अपहरण एक ऐसा उद्योग है जो सदियों से चला आ रहा है. यह कोई नया उद्योग नहीं है. राजकुमारियों को अपहरण कर शादी रचाने, राज्य हड़पने से शुरु हुआ यह धंधा धीरे-धीरे पैसा कमाने का सरल और आसान व्यवसाय होगया. पैसा उगाहने के लिए उद्योग पतियों, उनके पुत्रों/पुत्रियों का अपहरण चालू हुआ. धीरे-धीरे इसमें धनपशु डॉक्टर व अन्य व्यावसायिक वर्ग भी आ गया. आतंकवादी अपने साथियों को छुड़ाने के लिए इसका प्रयोग करने लगे. आदमियों के अपहरण से शुरु हुआ यह उद्योग बाइक, कार, बस, हवाई जहाज तक पहुँच गया. लेकिन इसकी यात्रा यहीं नहीं थमी. शोध जारी रहे, शाधोपरान्त एक नया क्षेत्र मिला किसी पैसे वाले व्यक्ति के पालतू कुत्तें का अपहरण. इलाहाबाद में केन्द्रीय सरकार के उपक्रम में अच्छे पद पर काबिज, एक अधि ाकारी के कुत्ते का एक दूसरे अधिकारी ने अपने विभाग में कार्यरत एक अनुबंधित श्रमिक से अपहरण करवा दिया. इसकी भनक कुत्ते के मालिक को कहीं से लग गयी. बात कर्मचारी युनियन तक पहुँची. युनियन को मुद्दा चाहिए सो बैठे-बैठाए मिल गया. न हिंग लगे न फिटकरी रंग चोखा ही चोखा. जहॉ नित आदमी भेड़, बकरियों की तरह मर रहे है, अपहरण हो रहे है वहॉ साध ाारण कुत्ते की क्या बिसात. लेकिन इस कुत्ते के लिए आरोपी अधिकारी के चेम्बर में जाकर बाहर से ताला लगाकर उन्हें फागुन के महीने में रंगो की जगह अपशब्दों की बौछार शुरु कर दी गयी. सैकड़ों कर्मचारियों का हुजूम उनके दरवाजे पर खड़ा फागुनी गाये घंटो खड़ा रहा. कुत्ते के मालिक कभी थानाध्यक्ष, क्षेत्राधिकारी व पुलिस अधीक्षक से अपने संबधों का हवाला देकर बार-बार कानाफुसी किए पड़े थे. काफी जद्दोजहद के बाद २४ घंटे कें अंदर कुत्ते को वापस घर पहुँचाने की मोहलत दी गयी अन्यथा आरोपी के खिलाफ एफ.आई. आर दर्ज की जाएगी. खैर कुत्ता २४ घंटे के अंदर वापस आ गया. लेकिन हमेशा की तरह बलि का बकरा बना अनुबंधित श्रमिक जो अपने अधिकारी के कहने पर कुत्ते को अपने घर उठा ले गया था. उसका परिसर में प्रवेश वर्जित कर दिया गया. डेढ़ दो हजार रुपये की नौकरी कर परिवार का किसी तरह भरण पोषण करने वाला श्रमिक उस घुमन्तु कुत्ते से बदत्तर है. अपहरण कराने वाले अधिकारी का तो कुछ नहीं बिगड़ा. यही है हमारे देश की न्यायिक, लोकतांत्रिक, विकसित होने की ओर अग्रसित भारत की असलियत जहॉ बड़े-बड़े कारनामें में शामिल रसूख वाले व्यक्ति स्वतंत्र घूमते हैं और निम्नतम व्यक्ति जेल की सलाखों के पीछे भेज न्यायिक व्यवस्था की दंभ भरी जाती है. क्या यही न्याय है? बिना आधार के मुद्दे पर बखेड़ा खड़ाकर अपना उल्लू सीध ाा करना आज नेताओं की फिदरत बन गयी.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

सम्पादकीय कार्यालयः
संरक्षक सदस्यः
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई
एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
कानाफुसीः 09335155949
ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com
gokul_sneh@yahoo.com

आवश्यक सूचनाः
1.पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।
स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

अंदर पढ़िए

प्रेरक प्रसंग–4
साहित्य मेला08 एक नजर में–5
कहानी–13
कविताएं–14–17, 23, 26, 27
व्यक्तित्व–16,17
अध्यात्म–18
लघु कथाएं–19
संस्कृति–20
समाज–22
स्नेह बाल मंच–24
सहयोगी साहित्यकार–25
चिट्ठी आई है–28
साहित्य समाचार–30
समीक्षा–31

बरेली

कहाँ गये वे लोग

मेरठ के प्रेमी मुद्रणालय के स्वामी स्व रत्न कुमार प्रेमी पुत्र श्री विश्वभर सहाय प्रेमी, बहुत ही हिन्दी अनुरागी थे. उन्होंने सकल्प लिया था कि वे अपने मुद्रणालय में सामाजिक एवं धार्मिक समारोह के निमंत्रण-पत्र अंग्रेजी में नही छापेगें.

ग्राहक जब अंग्रेजी में ही सामाजिक धार्मिक निमंत्रण-पत्र छपवाने आता, तब वे मातृभाषा के प्रति उसका सम्मान जाग्रत कर उसे हिन्दी में छपवाने के लिए तैयार करते, यदि ग्राहक अंग्रेजी के प्रति दुराग्रह करता तो वे विनय पुर्वक उससे कह देते कि 'मैं अंग्रेजी में नहीं छाप पाऊगा.'

अब रत्न कुमार प्रेमी जैसे हिन्दी प्रेमियों की आवश्यकता है, जो अंग्रेजी की मानसिक दासता को तोड़कर, तार-तार कर राष्ट्रभाषा के प्रति स्वाभिमान की भावना जाग्रत कर सके.

हिन्दी को प्रतिष्ठित करने का कार्य सिर्फ राजनेता व सरकारी कर्मचारियों का ही नहीं, आम जन का भी है. हिन्दी दिवस पर इसी तरह के व्यक्तित्व पर चर्चा होनी चाहिए, ताकि प्रतिभागी भी संकल्प ले सके और हिन्दी के व्यावहारिक प्रयोगो को बढ़ावा देने के अभियान में अपना सहयोग प्रदान करें.

दर्शन सिंह रावत, उदयपुर, राजस्थान

स्तम्भः क्या करें, क्या न करें

चिकित्सीय पर्चाः चिकित्सीय पर्चा आमतौर पर अंग्रेजी में ही लिखा जाता है. इसके साथ दवा लेने का तरीका पुरातन चिकित्सीय तरीकों से लिखा जाता है. इसे समझने में पढ़े लिखे आदमी को भी दिक्कत आ जाती है. कम पढ़े लिखे और अनपढ़ व्यक्ति को तो समझने में अच्छी खासी परेषानी आ जाती है. यह आवष्यक है कि चिकित्सक न केवल उस क्षेत्र की भाशा को समझे, बल्कि थोड़ा लिखना-पढ़ना भी जाने. पर्चा भले ही अंग्रेजी में लिखा जाये, दवा लेने का तरीका लिखने की पद्धति भले ही पुरातन हो, पर कुछ ऐसे निषान होने चाहिये जो रोगी के समझ में आ जाए. यह बात उन बोतलों पर लागू होती है जिसमें दवा रखी हुई हो. आज के व्यस्त युग में जहॉ किसी व्यक्ति को किसी के लिए समय नहीं है, वहॉ न केवल चिकित्सक रोगी को अधिक समय दे, उसे बैठकर एक-एक चीज भी समझा दे. जब तक चिकित्सक और रोगी के बीच में एक दूसरे को समझने की क्षमता नहीं आयेगी तब तक सही मात्रा में सही दवाई लेना असम्भव प्रतिक्रिया होगी. यदि दवा दिन में दो, तीन या चार बार लेनी है तो उसके ऐसे निषान बनाये जा सकते है जिससे रोगी को समझने में कोई दिक्कत नहीं आये. तभी सही इलाज होगा और रोगी जल्दी अच्छा होगा. डॉ. नरेन्द्र नाथ लाहा, ग्वालियर,म.प्र.

आदाब अर्ज

ज्ञानी सब यह जानते, दाता सबका एक।।

झूठ बोलना पाप है, कहता सकल जहान।
हिंसा रोके झूठ जो, समझो पुण्य समान।।

थोड़ी सी है जिन्दगी, होती कम हर रोज।
मकसद जानो जन्म का, करो सत्य की खोज।।

भला बुरा सब जानते, भला न करता कोय।
भला करे जो और का, हरि को भाता सोय।।

दो रोटी सूखी भली, करो न घी की आस।
शुकर करो भगवान का, है जो तेरे पास।।

लोग हकीकत जानते, जाना दुनिया छोड़।
लोभ-मोह छुटते नहीं, और मान की होड़।।

पूजन करते विष्णु का, लक्ष्मी मन को भाय।
कौन करेगा दोस्ती, जिसकी नारि सुहाय।।

बहुत गई थोड़ी रही, करो इसे साकार।
ऑसू पोंछो दीन के, करो 'सरल' उपकार।।

वी.के. अग्रवाल, बरेली

++++++++++++++++++++++++++++

सावधान

धूम्रपान + मद्यपान दोनो है शत्रु महान।
इनके पीने से परेशान है कुल जहान।।
इनको छोड़ो यदि चाहते हो कल्याण।
आपको मिलेगा हर जगह मान सम्मान।।
तुम्हें देख कर बच्चे बन रहे है शैतान।
बच्चों को बचाओं खुद बनकर नेक इंसान।

पॉचवा साहित्य मेला अपार सफलता के साथ सम्पन्न

गत वर्षो की भांति इस वर्ष भी विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद तत्वावधान पॉचवे साहित्य मेला का आयोजन हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद में किया गया. जिसमें देश के करीब २० राज्यों से पधारे साहित्यकारों/पत्रकारों/समाज सेवियों का सम्मान समारोह व अलंकरण समारोह के साथ 'आम आदमी और वर्तमान साहित्य' विषय पर परिचर्चा का आयोजन किया गया तीसरे सत्र में काव्य संध्या का आयोजन किया गया जिसमें रचनाकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से एक नयी दिशा देने का प्रयत्न किया. कार्यक्रम का शुभारम्भ सुश्री बी.एस. शांताबाई द्वारा मॉ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण से हुआ.

परिचर्चा में भाग लेते हुए म.प्र. के पधारे श्री राम प्रबल श्रीवास्तव ने कहा-*'आम आदमी मूल भूत सुविधाओं को जुटाने में व्यस्त होने के बावजूद मन को शान्ति प्रदान करते हुए क्षणिक विश्राम का आंकाक्षी है. ऐसे में उसे सत साहित्य मिल सके तो उसका कल्याण सम्भव है.*

प्रतापगढ़ से पधारे, श्री वृजेन्द्र द्विवेदी ने कहा- *'हिन्दी साहित्य के अनेकानेक साहित्यकार आम आदमी से जुड़कर लेखन किए है. मुंशी प्रेमचन्द्र, फणीश्वर नाथ, डॉ. काशी नाथ सिंह, अब्दुल्ल विस्मिल्लाह, डॉ. राही मासूम राजा आदि. निराला जी के काव्य में भी यह विधा आयी. आज आवश्यकता है साहित्य को धरातल से व्यक्ति को जोड़ने की ताकि आम आदमी सस्ता साहित्य पा सके और हमारे साहित्य को अपना सकें.'*

डॉ. कृष्ण मुरारी शर्मा ने कहा-*आज का साहित्य आम आदमी से दूर खड़ा है. आम आदमी की पीड़ा को, उसमें व्याप्त हताशा, निराशा को प्रकट करने का अवकाश हमारे पास नहीं है. आज देश का आदमी जहॉ था, वहीं खड़ा है. उसकी दशा स्वतंत्र भारत में भी जैसी की तैसी है. हम साहित्यकार सुविधा के लिए दुविधा की भाषा बोल रहे है. हमको अपनी सामर्थ्य और क्षमताओं का आम आदमी और राष्ट्रोन्नयन के लिए ही उपभोग करना चाहिए. हमारी संस्कृति पर प्रहार हो रहे है, मानवीय मूल्यों का हास हो रहा है. आज हमारी यही सबसे बड़ी चिन्ता है.*

इसके अतिरिक्त गायकवाड, श्रीमती सुखवर्ष कंवर तन्हा, वेद प्रकाश कंवर, डॉ. के.एन.दुबे, डी.पी.उपाध्याय, श्रीमती विजय लक्ष्मी विभा, सुश्री बी.एस. शांताबाई ने भी अपने विचार रक्खें. प्रातः अखिल भारतीय पत्र-पत्रिका एवं पुस्तक प्रर्दशनी से शुरु हुआ कार्यक्रम साहित्यकारों सहित आम आदमी को भी खुब लुभाया. लोगों ने देश की लगभग एक हजार पत्र-पत्रिकाओं एवं करीब ५०० साहित्यकारों की पुस्तकों का अवलोकन किया और इस तरह के संकलन के लिए संस्थान को सराहा भी. पुस्तकों की खरीददारी भी बढ़ चढ़कर आम आदमी ने की. परिचर्चा के बाद करीब १५ राज्यों से पधारे साहित्यकारों, संपादकों, पत्रकारों एव समाज सेवियों को सम्मानित किया गया तथा विश्व स्नेह समाज के डॉ. तारा सिंह विशेषांक का विमोचन भी किया गया. सम्मान समारोह में मुख्य रुप से डॉ०तारा सिंह, मुंबई-विद्या सागर, वेद प्रकाश कंवर, नई दिल्ली, सुखवर्ष कंवर 'तन्हा', नई दिल्ली को विद्या वाचस्पति, डॉ. सुरेन्द्र कुमार पाण्डेय, अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व, इलाहाबाद, डॉ. ओमप्रकाश हयारण दर्द, झांसी, उ.प्र. को साहित्य गौरव, श्रीमती विजय लक्ष्मी विभा, इलाहाबाद को साहित्य शिरोमणि, लायन अजीत सिंह, इलाहाबाद-समाज श्री, श्री हितेश कुमार शर्मा, बिजनौर,-साहित्य श्री, डॉ. कृष्ण मुरारी शर्मा, ग्वालियर-डॉ० रामकुमार वर्मा सम्मान, डॉ. रवि शर्मा,नई दिल्ली-बालश्री सम्मान, सुश्री बी.एस.शांताबाई, बंगलौर-राष्ट्रभाषा सम्मान, श्री बीजेन्द्र कुमार जेमिनी, पानीपता-सम्पादक श्री, ब्रज बिहारी ब्रजेश, खीरी-डॉ. किशोरी लाल सम्मान, दीपक कुमार घोष, खूंटी, झारखंड-युवा पत्रकारिता सम्मान, डॉ. श्रीमती अनीता पंडा, शिमला को विशिष्ट हिंदी सेवी सम्मान, कुलवंत सिंह, मुंबई-राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान, अनुराग मिश्रा, बुलन्दशहर, डॉ० अशोक पाण्डेय 'गुलशन', बहराइच, को विहिसा अलंकरण-०८ से सम्मानित किया गया. कार्यक्रम की अध्यक्षता कर्नाटक हिंदी प्रचार समिति की प्रधान सचिव सुश्री बी.एस.शांताबाई, विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ अधिवक्ता एवं पूर्व बार काउन्सिल अध्यक्ष, उ.प्र. श्री नरेश चन्द्र राजवंशी,. एवं मुख्य अतिथि के रुप में महर्षि पंतजलि विद्या मंदिर के सचिव श्री रविन्द्र कुमार गुप्ता थे.

सायंकाल काव्य संध्या का आयोजन किया गया. काव्य संध्या में डॉ. ओमप्रकाश हयारण दर्द-झांसी, श्री मोले राम शर्मा-रीवा, वृदांवन वर्मा-सीधी, दीवाना हिन्दुस्तानी-रीवा, सुखवर्ष कंवर तन्हा-नईदिल्ली, डॉ० ब्रजेन्द्र द्विवेदी-प्रतापगढ़, ईश्वर शरण शुक्ल -बहराइच, डॉ. तारा सिंह-मुम्बई, डी. पी.उपाध्याय-बलिया, अशोक कुमार गुप्ता-अम्बेडकर नगर, वसंत लाल

मुख्य अतिथिः श्री रवीन्द्र कुमार गुप्ता के उदगार

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं महर्षि पतंजलि विद्या मंदिर के

सचिव ने कहा-'समाज के उत्थान में साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान होता है. ऐसे में साहित्यकारों को प्रोत्साहन दिया ही जाना चाहिए. आज कार्यक्रम में ऐसा लग रहा है कि जैसे यहां भी एक साहित्यकारों का संगम लगा हो. विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के पदाधिकारी विशेषकर सचिव श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी बधाई के पात्र है. संस्थान से बड़ी बड़ी हस्तिया जुड़ी है, व सराहनीय कार्य कर रही है. मुझे देखकर यह आश्चर्य हो रहा संस्था के सभी पदाधिकारी श्रीमती विजय लक्ष्मी विभा, ईश्वर शरण शुक्ल, कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव आदि पूरी मेहनत और लगन से कार्य रहे हैं. देश के लगभग १५ राज्यों से पधारे विद्वजनों का राष्ट्रीय कार्यक्रम कहने में मुझे कोई संकोच नहीं हो रहा है. यहां सम्मानित होने वाले साहित्यकार एक गरिमामयी सम्मान लेने आये है. मैंने कार्यक्रम को बहुत हल्कें में लिया था लेकिन आज जब मैं अपनी आंखो से सबकुछ देख रहा हूँ तो इसकी विशालता का एहसास हो रहा है. संस्थान की पूरी टीम को इस आयोजन के लिए बधाई देता हूँ. साथ ही साथ आप सभी विद्वजनों का भी मैं हार्दिक स्वागत करता हूँ. सबसे बड़ी खुशी इस बात से हो रही है कि संस्थान स्नेहाश्रम जिसमें अनाथाश्रम, वृद्धाश्रम, हिंदी महाविद्यालय, पुस्तकालय और गौशाला प्रस्तावित है. इस पुनीत कार्य में हम सभी को यथा सम्भव सहयोग करना चाहिए.

सुश्री बी०एस० शांताबाई के उदगार

साहित्य मेला की अध्यक्षता कर रही कर्नाटक हिंदी महिला प्रचार समिति की प्रधान सचिव एवं हिंदी प्रचार वाणी की प्रधान संपादिका सुश्री बी.एस. शांताबाई ने कहा-'हिंदी के हित में कहीं भी कार्य हो उसे प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए. आज मुझे इलाहाबाद में पहली बार किसी कार्यक्रम में देश के कोने-कोने से आए साहित्यकारों का संगम दिखाई पड़ा. एक साथ, एक मंच पर इतने राज्यों से आये साहित्यकारों से मिलने का सौभाग्य बहुत कम ही मिलता है. परिचर्चा के लिए आयोजकों ने बहुत ही अच्छे विषय का चयन किया था. आज ऐसे विषयों पर परिचर्चा की आवश्यकता है. काव्य संध्या में भी अच्छी रचनाएं सुनने को मिली. मुझे यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं कि यह बहुत ही अच्छा और सफल आयोजन था. हिन्दी की सेवा में विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान का योगदान सराहनीय है. संस्थान के सचिव गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के प्रयास को देखकर मुझे लगता है कि ऐसा होनहार कर्मठ व्यक्ति मुझे मिल जाए तो मेरे संस्थान में चार चॉद लग जाए. देश के १५ राज्यों से साहित्यकारों को एक मंच पर इकट्ठा करना बहुत ही दुष्कर कार्य है. मैं संस्थान के सभी पदाधिकारियों का हृदय से आभार प्रकट करती हूँ जो इन्होंने मुझे इतना सम्मान दिया.

++++++++++++++++++++++++++++++

श्री नरेश चन्द्र राजवंशी के उदगार

साहित्य समाज का दर्पण होता है. देश के उत्थान में साहित्यकारों की अपनी महत्वपूर्ण भूमिका होती है. विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा आयोजित यह पॉचवा साहित्य मेला वास्तव में प्रशंसनीय है. देश के कोने-कोने से पधारे साहित्यकारों, संपादको, पत्रकारों का एक अदभुत संगम, संगम नगरी में यहां देखने को मिला है. देश के लगभग २० राज्यों से पधारे विद्वजनों का यह कार्यक्रम कोई छोटा मोटा कार्यक्रम नहीं बल्कि राष्ट्रीय स्तर का कार्यक्रम है. मुझे जब एक माह पूर्व इस कार्यक्रम के सूत्रधार व संस्थान के सचिव गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी जी मुझसे अतिथि के लिए कहने को आये थे, सभी पदाधिकारियों से अनजान मैं अतिथि पद को स्वीकृति देने में संकोच महसूस किया था. खैर मैंने इनके स्नेह को देखते हुए अपनी हामी भर दिया था. आज जब मैं अपनी आंखों से सब कुछ देख रहा हूँ तो मुझे लग रहा है इस युवा साहित्यकार, साधारण रहन सहन के परिपालक श्री द्विवेदी में वास्तव में एक महान व्यक्तित्व की झलक दिखती है. आज जहां आदमी अपने पारिवारिक कार्यक्रमों में भाग लेने का समय नहीं निकाल पाता, ऐसे में देश के कोने-कोने से ख्यातिलब्ध हस्तियों को एकत्र करना वंदनीय है. मैं श्री द्विवेदी की पूरी टीम को इस आयोजन के लिए बधाई देता हूँ. आप सबसे यह निवेदन भी करता हूँ कि आप लोग इस संस्थान के मिशन मे अपनी सहभागिता बढ़ चढ़कर निभाये. मैं स्वयं भी यथा सम्भव सहयोग देने का वादा करता हूँ.

तिवारी-इलाहाबाद, मदन मोहन- पानीपत, सूर्यबली सिंह-आजमगढ़, गगन श्रीवास्तव-इलाहाबाद, हितेश कुमार शर्मा-बिजनौर, हिलारुस लकड़ा -रायगढ़, चन्द्र प्रकाश शर्मा-इलाहाबाद, डॉ.गणेश गायकवाड़-मुम्बई, निशानाथ अवस्थी-हरदोई, श्री संजय श्रीवास्तव- मिर्जापुर, कवि कुलवंत सिंह-मुम्बई, वेद प्रकाश कंवर-नईदिल्ली, विजय लक्ष्मी विभा-इलाहाबाद आदि के काव्य पाठ किए. तीनों सत्रों का संचालन मो. अन्सार शिल्पी ने किया. अतिथियों का स्वागत श्रीमती विजय लक्ष्मी विभा, व ईश्वर शरण शुक्ल ने संयुक्त रुप से किया तथा धन्यवाद कार्यक्रम सयोंजक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने ज्ञापित किया. अतिथियों को माल्यार्पण कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव, श्रीमती जया द्विवेदी, व अशोक गुप्ता ने किया. इस अवसर पर सीटीवी इलाहाबाद के अजामिल जी, अन्तर्राष्ट्रीय श्रोता समाचार के संपादक अरुण अग्रवाल, सुपर इंडिया के संपादक वृन्दावन त्रिपाठी 'रत्नेश', निशा ज्योति संस्कार भारती के राजकिशोर भारती व मोहित गोस्वामी, सुर्य नारायण सूर, प्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ. विनय कुमार मालवीय, सोनिया गांधी बिग्रेड के प्रांतीय अध्यक्ष हेमचन्द्र श्रीवास्तव, एडवोकेट संगीता श्रीवास्तव, भा.रा.प.म.संघ के अध्यक्ष डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय, विश्व स्नेह समाज की बाल संपादिका संस्कृति गोकुल, नागर विमानपत्तन प्राधिकरण के उप महाप्रबंधक वेनी माधवन, सिविल के प्रबंधक महेन्द्र कुमार भाष्कर सहित सैकड़ों की संख्या में साहित्यकार, पत्रकार, समाज सेवी उपस्थित थे.

++++++++++++++++++++++++++++++++++

संस्थान की प्रगति आख्या

२००१ में गठित विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान का मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा का विकास करना है. इसके लिए देश ही नही बल्कि विदेशों में भी पुस्तकालय, हिंदी विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय की स्थापना कर हिंदी को प्रमुखता से पढ़ाने की व्यवस्था करवाना. पुस्तकालयों की स्थापना कर आम आदमी तक हिंदी की किताबों आसानी से सुलभ करवाना. हिंदी में कार्य करने वाले, हिंदी सीखने/पढ़ने/लिखने वालों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से जिला स्तर, राज्य स्तर, राष्ट्र स्तर व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर काव्य, लेख, कहॉनी प्रतियोगिताओं का आयोजन करना व सम्मानित करना, अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के हिंदी सेवियों को विशेष रुप से प्रोत्साहित करना. संस्थान हिंदी के उत्थान के साथ ही साथ सामाजिक कार्यो में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करना.

कार्यः संस्थान ने अत्यल्प समय में ही देश के १७५ साहित्यकारों, २५ पत्रकारों, १० समाज सेवियों को सम्मानित करने का गौरव हासिल किया है. कुछ निर्धन साहित्यकारों के संग्रह का प्रकाशन कर चुकी हैं. संस्था ने हिंदी भाषी राज्यों के साथ ही साथ अहिन्दी भाषी राज्यों में भी अपने पॉव पसार दिए हैं. संस्थान द्वारा २००३ से निरन्तर बहुचर्चित साहित्य मेला का आयोजन किया जाता रहा है. इस आयोजन में देश के कोने-कोने से ख्यातिलब्ध साहित्कार, पत्रकार, संपादक भाग लेते है. इस मेले में पुस्तक प्रर्दशनी, परिचर्चा, कवि सम्मेलन व सम्मान समारोह का आयोजन किया जाता है. पाठकों देश की हजारों पत्र-पत्रिकाओं को जानने व समझने का सुअवसर प्राप्त होता है. संस्थान द्वारा कुछ उपाधिया भी दी जाती है-जैसे विद्या वारिधि, विद्या सागर, विद्या वाचस्पति, साहित्य गौरव, साहित्य रत्न, पत्रकार रत्न, सम्पादक रत्न, समाज श्री, साहित्य शिरोमणि. प्रत्येक वर्ष ख्यातिलब्ध साहित्यकारों के जन्मदिवस के अवसर पर भी कार्यक्रम आयोजित किए जाते है तथा युवा प्रतिभाओं को आगे लाने के लिए काव्य प्रतियोगिता, कहानी लेखन प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता का भी आयोजन किया जाता है. सम्पूर्ण भारत के साथ ही साथ जापान, सुरीनाम, जर्मनी व पाकिस्तान में भी अपने सदस्य बनाये हैं.

अनाथ बच्चों व असहाय वृद्धजनों के लिए स्नेहालय का शिलान्यास कर अस्थाई भवन में बहुत छोटे स्तर पर कार्य शुरु हो चुका है. संस्थान अभी अस्थायी तौर पर तीन जगहों पर पुस्तकालय संचालित कर रहा है. जिसमें हिंदी साहित्य के साथ ही साथ पाठ्यक्रमों की पुस्तकें भी उपलब्ध हैं. संस्थान के माध्यम से काफी निर्धन छात्र शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं. साथ ही महिलाओं को आत्म निर्भर बनाने के लिए उन्हें सिलाई, पेंटिग, कढ़ाई, गुड़िया, सजावाटी समान, खिलौना, अलग-अलग तरह के बच्चों के कपड़े बनाने की टेनिंग दी जाती है. प्राकृतिक आपदाओं पर संस्थान द्वारा सहयोग दिया जाता रहा है. शीघ्र ही संस्थान के स्वप्न स्नेहाश्रम को बनाने के लिए प्रयासरत है. जो सम्पूर्ण सामाजिक दायित्व का वाहक होगा.

मेरा नाम प्रेमचन्द्र है

अपने आपको लेखक समझने वाले एक सज्जन किसी प्रकाशक के पास गए. पुस्तक की पांडुलिपी की उलट-पुलट कर देखने के बाद प्रकाशक ने कहा-पुस्तक तो काफी दिलचस्प है, लेकिन हमारी भी एक पॉलिसी है कि हम केवल प्रसिद्ध नाम वाले लेखकों की रचनाएं ही छापते है. **लेखक महोदय ने** फौरन कहा-तब तो और भी अच्छा है मेरा नाम प्रेमचंद है.

कार्यक्रम संयोजक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के उदगार

परम स्नेही विद्वजनों, आज आप विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा आयोजित पॉचवे साहित्य मेला में आप अपनी सहभागिता निभाने के लिए देश के कोने-कोने से यहां आये है. आपके लिए और संस्थान के लिए भी गौरव की बात है. आज इस कार्यक्रम में जो विभूतियां सम्मानित होगी वे भारत के २० राज्यों से प्राप्त प्रविष्टियों में निर्णायक मंडल के समूह द्वारा लम्बी प्रक्रिया के बाद चयनित हुए है. ऐसा भी हो सकता है कि किसी पुरस्कार से सम्मानित होने वाला विद्व उसकी गरिमा के अनुरुप न हो, लेकिन यह हमारी बाध्यता है कि हम प्राप्त प्रविष्ट्रियों का ही मूल्यांकन कर उनमें सर्वोच्च का चयन करते है. साथ ही मुझे यह भी कहने में संकोच नहीं हो रहा है कि आज कुछ ऐसे भी विद्वजन सम्मानित हो रहे है जिनके लिए संस्थान द्वारा प्रदत्त सम्मान उनकी गरिमा के अनुरुप छोटा होगा. फिर सभी सम्मानित होने वाले विद्वजन बधाई के पात्र है क्योंकि उन्हें गरिमामय कार्यक्रम, राष्ट्र स्तर पर ही नहीं बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर भी अपनी गरिमा बनाने की ओर अग्रसित संस्थान द्वारा सम्मानित किया जा रहा है. आप सभी विद्वजनों का मैं हार्दिक आभार व्यक्त करता हॅू.

बटन दबाने का झंझट कौन करता फिरेगा

पिता ने पुत्र से कहा-मैं अच्छी तरह समझ गया कि तुम कितने आलसी हो. तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए एक खूबसूरत सा बंगला बनवा दूं और एक बटन लगवा दूं तुम्हारे पलंग के पास, जिसे तुम लेटे-लेटे दबा दिया करो. जिससे तुम्हारी मनचाही चीज तुम्हारे पास आ जाया करें.
बेटा-नहीं मुझे ऐसा बंगला नहीं चाहिए. यह बटन दबाने का झंझट कौन करता फिरेगा?

+++++++++++++++++++++++++++++++++++

एक होटल में दो व्यक्ति बैठे थे. एक दूसरे ने कहा-महाशय जी मालूम है, आप अखबार उल्टा रखकर पढ़ रहे हो?
दूसरा बोला-जी मालूम है, आप इसे क्या आसान काम समझ रहे है?

+++++++++++++++++++++++++++++++++++४

पॉचवे साहित्य मेला में सम्मानित विद्वजन

विद्या सागरः डॉ०तारा सिंह

१० अक्टूबर १९५२ को बिहार प्रांत के मुंगेर जिले में जन्मी डॉ० तारा सिंह की शिक्षा भागलपुर, बिहार में हुई. छात्रजीवन से ही कुशाग्र बुद्धि की धनी डॉ० तारा को बचपन से कविता रचने, खेल-कूद में सरीक होने, संगीत, नृत्य, वाद-विवाद और लेखन में सहभागिता निभाने की ललक थी. अध्यनोपरान्त आपका विवाह डॉ. बी.पी.सिंह, प्रवक्ता से हुई और आप बिहार छोड़कर कलकत्ता चली आई. अपनी व्यस्त जिंदगी के बावजूद कविताएं लिखती रही, जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशित होती रही. लोगों ने इन्हें काफी सराहा भी. लेकिन आर्थिक तंगी के कारण इनकी रचनाएं पुस्तक का रूप न ले सकी. अपने मातृऋण से मुक्त होने के बाद ताराजी साहित्य सेवा में पूर्ण रुपेण तल्लीन हो गई और शुरू हो गया प्रकाशनों का दौर. लगभग १६ काव्य संग्रहों व ४६ सहयोगी काव्य संकलनों में भी अपनी उपस्थिति दर्ज करायी. लगभग ७० देश व विदेश की विभिन्न संस्थाओं द्वारा विभिन्न सम्मानो, उपाधियों से नवाजी जा चुकी है. आपने हिंदी फिल्म 'सिपाही जी' के टाईटल सांग भी लिखा है. आप विश्व हिंदी साहित्या सेवा संस्थान की उपाध्यक्षा समेत विभिन्न संस्थाओं से जुड़ी हुई है.

विद्या वाचस्पतिः श्री वेद प्रकाश कंवर

१३ अप्रैल १९३७ को बिहारी मंडी, मुल्तान, बंगलादेश में जन्में, हिंदी, पंजाबी, अंग्रेजी, जर्मन वियतनामीज के ज्ञाता, कैबिनेट सचिव, विदेश सेवा, सूचना एवं प्रसारण, परिवहन, गृह मंत्रालय में कार्यरत रहे, जंगल मोनार्क, जेम्स फ्रॉम केब्ज ऑफ ओशियन्स-दो भाग, कहॉनी संग्रह, एक नई क्रांति उपन्यास के रचयिता, वियतनाम, हांगकांग, चीन, लाओस, आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया, हंगरी, इटली, फ्रांस, स्विटजरलैंड, कनाडा में प्रवास कर चुके व यात्राएं कर चुके श्री वेदप्रकाश कंवर, नई दिल्ली

विद्या वाचस्पतिः सुखवर्ष कंवर 'तन्हा',

९ अक्टूबर १९४४, गुजरवांला, पाकिस्तान में जन्में, हिंदी, पंजाबी, अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच की ज्ञाता, सुखधाम वोकेशनल इंस्टीट्यूट, दिल्ली की पूर्व अध्यापिका, वियना और वियतनाम में भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए कार्य किया, मीरा मण्डल, वर्तमान मानव संस्कृति मंच, हिन्दी विश्व संस्कृति, ऋचा, इंडियन सोसायटी ऑफ आर्थस, दिल्ली हिंदी साहित्य सम्मेलन, ऑथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया से संबंधा, कैक्टस की छांव, मेरी तुम्हारी, उसकी कहॉनी, २१वीं सदी का आदमी, बचपन के दर्पण में, कैसे-कैसे लोग, अंधेरे उजाले, आतंकवाद की लपटे-कहांनी संग्रह, खामोश जिन्दगी काव्य संग्रह, अनकही, दर्द के बढ़ते दायरे, गूंजती आवाजें प्रकाशनाधीन, हिन्दी अकादमी, दिल्ली सहित कई संस्थाओं से सम्मानित, विदेश प्रवास के दौरान भी साहित्यिक गतिविधियों में रुची रखने वाली, सुख वर्ष कंवर 'तन्हा', नई दिल्ली को यह उपाधि प्रदान कर संस्थान स्वयं को गौरान्वित महसूस कर रहा है.

साहित्य गौरवः डॉ० एस.के.पाण्डेय, अपर जिलाधिकारी, इलाहाबाद

२५ जून १९५६ को जन्में, मूलरुप से वाराणसी, निवासी, परास्नातक संस्कृत, साहित्याचार्य, साहित्य रत्न प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण, इलाहाबाद विश्वविद्यालय से डी.फिल, १९८५ में पीसीएस कार्यकारी शाखा में चयनित, श्लेष अलंकार सिद्धात एवं प्रयोग, ज्योतिष शब्द कोष, ज्योतिष पंचशती, धर्मशास्त्र सहश्रक्मू, आयुर्वेद पंचशती, उत्तर खोजते प्रश्न, उत्तर प्रदेश की नदियां एवं पहाड़, हिन्दू समाज के प्रचलित संस्कार, भारत की विदुषी महिलाएं, वास्तु शब्दार्णव, रत्न विमर्श, अमृत जीवन अरिष्ट योग विमर्श, शंकर गीता कृतियां प्रकाशित हो चुकी है. पूर्वांचल लोक बोली कोष प्रकाशनाधीन है. आपको उ.प्र. संस्कृत संस्थान द्वारा वास्तु शब्दार्णवपर नामित पुरस्कार, उ.प्र.हिन्दी संस्थान द्वारा अमृत जीवन पर डॉ. बीरबल साहनी पुरस्कार प्राप्त कर चुके, जिला बचत अधिकारी खीरी, मिर्जापुर, सहायक निदेशक, राष्ट्रीय बचत गोरखपुर मण्डल, उपजिलाधिकारी मिर्जापुर,सोराव,सदर, फुलपुर,प्रभारी अधिकारी माघ मेला, इलाहाबाद, संयुक्त सचिव, इलाहाबाद विकास प्राधिकरण, नगर मजिस्ट्रेट, इलाहाबाद, अपर मेला अधिकारी, इलाहाबाद, मुख्य राजस्व अधिकारी, इलाहाबाद, अपर नगर मजिस्ट्रेट प्रथम, इलाहाबाद, उप नियंत्रण, नागरिक सुरक्षा, झांसी, डिप्टी कलेक्टर, संग्रह विक्री कर, इलाहाबाद, अपर जिलाधिकारी-प्रशासन इलाहाबाद, फैजाबाद, अपर आयुक्त, इलाहाबाद, लखनऊ, अपर जिलाधिकारी -वित्त एवं राजस्व, इलाहाबाद तथा सचिव, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद डॉ० सुरेन्द्र कुमार पाण्डेय, इलाहाबाद को सम्मानित कर गौरान्वित महसूस कर रहा है.

साहित्य गौरवः श्रीमती विजय लक्ष्मी विभा

संस्थान द्वारा अपनी संस्था के किसी पदाधिकारी को हिंदी सेवा में उल्लेखनीय योगदान के लिए दिया जाने वाला यह सम्मान २५ अगस्त १६४६ को जन्मी, सुविख्यात लेखक, कवि एवं नाटककार स्व. अम्बिका प्रसाद दिव्य की सुपुत्री, हिन्दी एवं अंग्रेजी से परास्नातक, बी.एड, एक गीत संग्रह व एक काव्य संग्रह की रचयिता, करीब दस कविता, हास्य व्यंग्य रचनाए, कहानी संग्रह, ग़ज़ल संग्रह प्रकाशन को तैयार, अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन के तत्वावधान में महामहिम राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा द्वारा साहित्य श्री सहित १६ संस्थाओं से सम्मानित, अखिल भारतीय अम्बिका प्रसाद दिव्य पुरस्कार समिति की संयुक्त सचिव, यूनाइटेड राइटर्स एसोसियेशन, अमेरिकन बायोग्राफीकल इंस्टीटयूट की सदस्य, राष्ट्रीय साहित्य संगम की निदेशक, भारत सहित नेपाल में भी कई साहित्यिक आयोजनों सहभागिता निभा चुकी, व सम्मानित हो चुकी, नवीन पीढ़ी की कवयित्रियां, जय इंदिरा काव्य संग्रह, दिव्यालोक एवं विश्व स्नेह समाज की सह संपादक, धर्मयुग, नवनीत, अवकाश, आनंद जैसी प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी है, भोपाल, जबलपुर, छतरपुर, सागर, इलाहाबाद एवं विविध भारती से सुगम संगीत एवं काव्य में प्रसारित हो चुकी, पं. विष्णुकांत शास्त्री, पं. केशरी नाथ त्रिपाठी, पं. बनारसी दास चतुर्वेदी, पं. वचनेश त्रिपाठी, श्री विनोद के किरी आदि के द्वारा प्रशंसित हो चुकी, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान की संस्थापक अध्यक्ष श्रीमती विजय लक्ष्मी विभा, इलाहाबाद को यह सम्मान देते हुए खुद को गौरान्वित महसूस कर रही है.

साहित्य गौरवःडॉ० ओमप्रकाश हयारण 'दर्द'

संस्थान की कार्यसमिति के द्वारा स्वविवेक से साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए दिया जाने वाला यह सम्मान ५ जनवरी १६४७ को जन्में, दो काव्य संग्रह, ३ ग़ज़ल संग्रह, २ दोहा संग्रह, १ गीत संग्रह, ३ गद्य काव्य की पुस्तकों के लेखक, करीब ४१ संस्थानों द्वारा सम्मानित एवं १४ संस्थाओं द्वारा अभिनंदित, साहित्यिक, सांस्कृतिक, कला संगम, अकादमी, परियॉवा के सरंक्षक, विद्युत प्रेषण खंड से सेवानिवृत डॉ० ओमप्रकाश हयारण 'दर्द' को प्रदान किया जाता है.

साहित्य श्रीः हितेश कुमार शर्मा

एक कहॉनी पर दिया जाया जाने वाला ५००० रुपये नगद का यह सम्मान, एडवोकेट, जिला-प्रभारी, मानवाधिकार सरंक्षण मंच बिजनौर, व्यापार कर एवं काव्य की २५ पुस्तकें प्रकाशित, ५३ सहयोगी काव्य संकलनों में तथा करीब २५ पत्र-पत्रिकाओं व दैनिक समाचार पत्रों में रचनांए प्रकाशित, हितैशी, ब्राहमण अर्न्तराष्ट्रीय समाचार, कर एवं व्यापार के संपादक है. ए.वी.आई यू.एस.ए द्वारा मैन आफ द ईयर सहित करीब २६ संस्थाओं से सम्मानित, ब्राहमण अन्तर्राष्ट्रीय के विश्व उपाध्यक्ष श्री हितेश कुमार शर्मा, बिजनौर, उ०प्र० को प्रदान किया जाता है.

डॉ० रामकुमार वर्मा सम्मानःडॉ०कृष्ण मुरारी शर्मा

एक नाटक पर २५००/- रुपये नगद, रामकुमार वर्मा ट्रस्ट की ओर से दिया जाने वाला यह सम्मान १५ नवम्बर १६३६ को जन्में, उच्च शिक्षा विभाग में हिन्दी विभागाध्यक्ष पद से सेवानिवृत, काव्य, नाटक, मुक्तक की लगभग दस पुस्तकें प्रकाशित करवा चुके, पांच पुस्तकों का संपादन, सात अप्रकाशित कृतियां है. आपने वीर मजदूर सा०, अमर दैनिक साध्यकालिन, सांध्य दैनिक टुडे न्यूज का संपादन भी किया है. वर्तमान में शोध मार्ग दर्शक, जिवाजी विश्वविद्यालय में कार्यरत डॉ० कृष्ण मुरारी शर्मा, ग्वालियर, म.प्र को प्रदान किया जाता है.

बालश्री सम्मानः डॉ० रवि शर्मा

किसी एक बाल रचना पर १०००/- रुपये नगद दिया जाने वाला यह सम्मान १६६२ में दिल्ली में जन्में, एम.ए. , एम.एड. पी.एच.डी कर चुके, लगभग ८ काव्य संकलनों एवं आलेख की पुस्तकों के प्रणेता, हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा शिक्षक पुरस्कार व सहसताब्दी विश्व हिंदी समिति द्वारा राष्ट्रीय हिंदी सेवी सहसताब्दी सम्मान-२००० से सम्मानित हो चुके, प्रभारी, हिंदी विभाग, श्रीराम कॉलेज ऑफ कामर्स, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली में कार्यरत डॉ० रवि शर्मा को प्रदान किया जाता है.

सम्पादकश्रीःबीजेन्द्र कुमार जेमिनी

सम्पादकीय सेवा में उत्कृष्ट योगदान के लिए दिया जाने वाला यह सम्मान ४ नवम्बर १६६५ को जन्में, एम.ए. हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विशारद, फिल्म पत्रकारिता कोर्स, राऊण्डर, जेमिनी अकादमी हिंदी समाचार का संपादन कर रहे बीजेन्द्र कुमार जेमिनी, पानीपत, हरियाणा को प्रदान किया जाता है.

डॉ० किशोरी लाल सम्मानःब्रज बिहारी ब्रजेश

श्रृंगार रस पर आधारित हिंदी की विभिन्न विधाओं में रचनाओं के लिए इलाहाबाद के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के

विद्वान डॉ० किशोरी लाल के नाम पर दिया जाने वाला यह सम्मान विद्युत अभियंन्त्रिकी में डिप्लोमा, सैकड़ों रचनाएं विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित करवा चुके, कई संस्थाओं द्वारा सम्मानित, दो उपन्यास, एक खंड काव्य के रचयिता श्री ब्रज बिहारी ब्रजेश, खीरी, उ०प्र० को प्रदान किया जाता है।

युवा पत्रकारिता सम्मानः दीपक कुमार घोष

पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए किसी युवा पत्रकार को दिया जाने वाला यह सम्मान १९९३ से पत्रकारिता कर रहे हैं, करीब १५ मासिक, साप्ताहिक व दैनिक समाचार पत्रों से जुड़े हुए खूंटी, झारखंड निवासी, दीपक कुमार घोष को प्रदान किया जाता है.

राष्ट्रभाषा सम्मानः सुश्री बी.एस.शांताबाई

अहिन्दी भाषी क्षेत्र में हिन्दी के उत्थान के लिए कार्यरत किसी हिंदी विद्वान को दिया जाने वाला यह सम्मान १६ दिसम्बर १९३१, को कर्नाटक में जन्मी, मातृभाषा कोंकणी, मराठी, कन्नड़ व हिंदी की ज्ञाता, मैसूर विश्वविद्यालय से परास्नातक हिंदी, कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति की स्थापना में १९५८ में सक्रिय हुई तथा तन-मन-धन से लगी हुई है. स्कूल में नौकरी के साथ-२, सुबह शाम हिंदी की कक्षाएं चला कर हिंदी की सेवा करने वाली, १९७६ से प्रधान सचिव, कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति के पद पर कार्यरत, हिंदी शिक्षा समिति की सदस्य रही, प्रथम व तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलनों में भाग लेने वाली, ऊर्जा मंत्रालय, कल्याण मंत्रालय, विद्युत मंत्रालय, कोयला मंत्रालय में हिन्दी सलाहकार समिति की सदस्य रही, हिन्दी प्रचार सभा, हिंदी साहित्य सम्मेलन, मैसूर हिंदी प्रचार परिषद, केन्द्रीय संस्थान, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, विश्व हिंदी सम्मेलन सहित लगभग ३४ संस्थाओं से विभिन्न सम्मानों से सम्मानित, विदेश की कई बार यात्राएं कर चुकी, प्रधान संपादक, हिन्दी प्रचार समिति, सुश्री बी.एस. शांताबाई, बगलौर, कनार्टक को प्रदान किया जाता है.

विहिसा अलंकरणः अनुराग मिश्रा

४ सहयोगी काव्य संकलनों में प्रकाशित, सरिता, कादम्बिनी, व कई दैनिक समाचार पत्रों में प्रकाशित, अनुराग मिश्रा, बुलन्दशहर, उ.प्र. को यह अलंकरण प्रदान किया जाता है.

विशिष्ट हिंदी सेवी सम्मानः डॉ. श्रीमती अनीता पंडा, शिमला

हिंदी सेवा के लिए अहिन्दी भाषी क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए दिया जाने वाला यह सम्मान, गत २४ वर्षो से शिलांग, मेघालय में हिन्दी के उत्थान के लिए अग्रसित, अनुत्तरित प्रश्न, कहॉनी संग्रह, मेघालय की लघु कथाएं, आकाशवाणी व दूरदर्शन पर प्रसारित होती आ रही, आकाशवाणी शिलांग की उदघोषिका डॉ. श्रीमती अनीता पंडा, शिलांग को प्रदान किया जाता है.

राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मानःकुलवंत सिंह

विभिन्न विधाओं में निपुणता, हिंदी सेवा के साथ-साथ किसी अन्य क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए दिया जाने वाला यह सम्मान ११ जनवरी १९६७ को जन्में, निकुंज काव्य संग्रह, परमाणु एवं विकास-अनुवाद, विज्ञान प्रश्न मंच की पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है. कण-क्षेपण प्रकाशनाधीन है, कई संस्थाओं द्वारा सम्मानित, वैज्ञानिक अधिकारी, पदार्थ संसाधन प्रभाग, भाभा परमाणु अनुसंध ाान केन्द्र, मुंबई के कवि कुलवंत सिंह, मुबई को प्रदान किया जाता है.

विहिसा अलंकरणः डॉ० अशोक पाण्डेय

विभिन्न सम्मानों में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले विद्वजनों को दिया जाने वाला यह सम्मान २५ जुन १९६३ को जन्में, ५ पुस्तकों का प्रकाशन करवा चुके, १० सहयोगी संकलनों में प्रकाशित, ६४६ लोकप्रिय समाचार पत्रों में कविताएं, गीत, ग़ज़ल दोहे, मुक्तक, परिचय प्रकाशित, ७ आडियों कैसेट में गीत संकलित, देश की विभिन्न संस्थाओं से १५८ सम्मानों से सम्मानित हो चुके प्रभारी चिकित्साधिकारी के पद पर कार्यरत डॉ० अशोक पाण्डेय 'गुलशन' को प्रदान किया जाता है

समाजश्री सम्मानः लॉयन अजीत सिंह, इलाहाबाद

लायन्स क्लब के पूर्व अध्यक्ष, डिप्टी डिस्ट्रिक्ट गर्वनर, प्रखर समाज सेवी, गुरु सिंह सभा, इलाहाबाद के अध यक्ष लायन अजीत सिंह यह सम्मान देते हुए स्वयं को गौरान्वित महसूस कर रहा है.

साहित्य मेला: २००८ कैमरे की नजर में

गेरूवे की आत्म हत्या

✍जलज भादुड़ी, कलकत्ता

"न मैं किसी संस्कृति का हूँ न किसी का सगा संबंधी, ना मैं किसी समाज का प्राणी हूँ." एक मित्र को अम्बर ने बताया था,

अंबर, मंदिर के पिछवाड़े खंडहरों में चुपचाप सोया पड़ा था. चट्टानी ओडयारों में जोगी–जमाती चिलम फूंक रहे थे. ईश्वर ही जाने कौन थे, झुग्गी वाले यायावर और कौन–कौन थे योगी. सभी मस्त थे. हिप्पियों का धर्म ज्ञान आध्यात्म ज्ञान, इसमें कितनी सच्चाई है, कौन जाने. इन हिप्पियों पर अम्बर की आस्था नहीं के बराबर है. सब ढोंग है, सरासर ढोंग. अपने अनन्य पापों के प्रक्षालन के उद्देश्य से निकल पड़ते है ये हिप्पी यायावर. इन्हें कंधे पर लादे ले चलते हैं घोड़े, गधे, और कभी–कभी मनुष्य रुपी पशु अर्थात् यह गरीब पहाड़ी कुली. इन गोरी चमड़ी वालों के झुंड में ही अवश्य आया है अम्बर भी, पर उसकी हकीकत कुछ और ही है. वह धन खोर लालचियों में से नहीं है. इन बीहड़ वनों की तन्हाई उसे यहाँ खींच लाई है.

एक ओर समाज में धोखबाजी के धंधे बढ़ते जा रहे है तो दूसरी ओर इन यायावरों को सत्य का खोजी, ईश्वर उपासक आदि समझकर धर्म–प्राण समाज इन्हें ऊँचा दर्जा देता है. पाप की ताड़ना से खदेड़े गये पलायनवादी हैं ये सब के सब. इनका जो कुछ सच है वह उनका मुखौटा है. भीतर सब कुछ झूठ है. चाहे अपने को आदर्श यायावरी, सिंदबाद या मार्कोपोलो के वंशज ही क्यों न बतातें हों. अंबर मन ही मन कह रहा था क्या हम भी आदि–शंकराचार्य के वंषज नहीं है, पर वंष से क्या होता है, अच्छे और बुरे कर्म से ही अच्छा और बुरा, धर्म और विश्वास बनता बिगड़ता है. इन गोरी चमड़ी के पीछे रिरियाते घिघियाते पहाड़ी गरीबों पर तरस खा रहा था अम्बर. रंगीन टोपियों, टॉफियों और चाकलेटों के पीछे या दो चार रुपये बक्कीस के खातिर, यह दलिद्र जाति इनके तलवे चाटते हैं. रेडक्रॉस सेवा दल एक अच्छी संस्था अवश्य है पर काम करने वाले कितने का मान साफ है? पर अम्बर तो साफ मन से इसमें आया था. यहाँ देश–देश, पहाड़ों–पर्वतों में घूमना पड़ता है. अम्बर को यही अच्छा लगता है. इससे पहले भी ढोंग के जीवन से भाग निकलने की अनेक कोशिशें की है अम्बर ने. जीवन ही हर दिशा में हमलावर तेवरों की हमलेबाजी ने उसे कहीं का छोड़ा कहाँ है?

"न मैं किसी संस्कृति का हूँ न किसी का सगा संबंधी, ना मैं किसी समाज का प्राणी हूँ." एक मित्र को अम्बर ने बताया था, यहीं परिचय हुआ था जिससे थोड़ी देर पहले.

"धनखोरी का नशा एक भयंकर महामारी का कीड़ा होता है."

"क्यों इतनी विरक्ति है तुममें."

"मेरे पिता–माता इसी के पीछे भागे जो थे. मेरी आज एक छोटी बहन रह सकती थी. पर उसे रहने नहीं दिया. उसे सिड्स की बीमारी हो गई थी, अकस्मात शिशु मृत्यु या सड़न इन्फेंट डेथ सिंडम, तभी नींद में सोई सोई वह मर गई. असल में उसका पृथ्वी पर आना उन लोगों ने नहीं चाहा."

"तुम इतनी उलझी–2 बातें कर रहे हो क्या तुम स्वस्थ नहीं हो?"

"सब सच है, सुलझा है, पानी की तरह साफ है. तब नहीं था, आज है. मम्मी का युनाइटेड–स्टेट्स से बुलावा आया था–विश्व महिला सभा की सेक्रेटरी बनने का मौका. फिर क्या था सात महीने के बच्चे को आपरेशन करके इसलिये पहले निकलवा लिया कि वह सभा में भली चंगी जा सकें. फलस्वरुप केवल डेढ़ किलो वजन की भी नहीं न बन पायी मासूम वह बच्ची. यह था आधुनिकता का बुखार–मम्मी को."

बीस साल बीत गये, हर रात जागता हूँ, आकाश के तारे गिनता हूँ. अपनी आप बीती की छानबीन करता हूँ. चीड़ फाड़ करता रहता हूँ. हमारे मस्तिश्क में धरी तस्वीरें यादों का पानी पाकर नेगेटिव से पाजिटिव बनती रहती है. तब, जबकि हमारे माता पिता को आधुनिकता के दौरे आया करते थे. मैं इन छोटी–2 ऑखों से सब कुछ केवल अपने भीतर चित्र खींचता रहता था, छोटा बच्चा जो था मैं.

एक दिन मैंने देखा मां बहुत खुश है, कारण पापा के साथ उनका तलाक कोर्ट से मंजूरी पा गया है

दोनों दम्पत्ति ऐसे खुश थे मानों तलाक में पहल करने वाले वे झंडाधारी मुक्ति योद्धा थे. मॉ अपनी सहेली से फोन पर कह रही थी "व्यक्ति स्वाधीनता, नारी मुक्ति का यही पहला सोपान है. तलाक को सामाजिक स्वीकृति मिलनी ही है." वह कहना चाह रही थी, इस तलाक से नई संस्कृति, नया समाज, नया इतिहास जन्म लेने वाला है. मैं उस छोटे से मस्तिष्क में इन सारी बदहजमी की बातों को भला, कब तक बरदाश्त करता. कभी जंगलों में, कभी नदी किनारे भाग जाता था. कुछ दिनों तक मम्मी और पापा मानो छुपा–छुपी का खेल रहे हों, ऐसा पेश आने लगे, डिवोर्स के बाद परंतु समय जब बीतता गया दोंनों अपने को इतना बहादुर समझने लगे कि एक मकान के एक ही छत के नीचे मुझे साक्षी रखकर पिताजी अपने नारी और मॉ पुरुष दोस्तों से मिलते जुलते रहे. धन रोजगारी के जैसे, इस दिशा में भी दोनों की होड़ा होड़ी चलती रही. कभी–कभी यह भी हुआ कि नशे में वे अपने को पुनः बनाये गये मित्र समझकर, होटलों में एक दूसरे को गल बॉहें लिये नजर आते पर हवस मिटते ही दुसरे ही दिन सुबह अलग हो जाते, जब नशा टूट जाता. उनका जीवन एक विकलांग और विकृतिमय सपना था. उनसे कटकर मैं अपने को सदा इतना असुरक्षित पाता था कि आवेश और बदले की आग में जलता रहता था, नींद में अपने को स्टोनमैंन समझता था. उस दशा में पेड़ पौधों को चाकू भोंक देना, नदी वक्ष में बड़े–बड़े पत्थर मारना–इसमें आनन्द पाता था, जबकि दूसरे बच्चे आपस में गेंद खेलते, वहीं मैं यह सब विध्वंसकारी खेल खेलता और अकेले–अकेले जंगलो में पशु पक्षियों, पेड़ पौधों पर, अत्याचार करता फिरता था.

मम्मी–पापा के डिवोर्सड जीवन के दो सिरों को केवल मैं ही पुल जैसे जोड़े हुए था. कारण न मम्मी मुझे छोड़ने को राजी थीं न पापा. दोनों मेरे लिये ही केवल एक मकान में रहते थे. मै पल जरुर रहा था. पर दोनों मुझे छू नहीं पाते थे. मैं तो दोनों से ही नफरत करने लगा था.

आत्मग्लानि से दग्ध हो, जब ऐसी लम्बी–लम्बी कथानकों का पुल बांधता रहता अम्बर, उस समय रिशभ अर्थात वह शैलानी अक्सर, उसका मित्र, चुप रहा करता. कारण चुप्पी को तोड़ते हुए फिर दुबारा अम्बर ही शुरु हो जाता था.

"मम्मी एक बड़े मर्चेन्ट ऑफिस में अफसर थी और पापा की निजी व्यापार था. अतः दोनों आत्मनिर्भर थे. दोनां अपने–अपने में मगन और दिखाना चाहते थे. बिना एक दूसरे के सहारे ही वे क्या कुछ हासिल नहीं कर रहे है, बहुत सूखी है. यहॉ भी वहीं एक होड़ का नशा."

ऋषभ अम्बर की भावनाओं की कड़ी को तोड़ना नहीं चाहता था. तभी वह बीच में बोलता बिल्कुल नहीं था.

"हर दिशाओं में मेरी मॉ फैशन के पीछे दिवानी थी. रोजाना सब कुछ बदलना. यहॉ तक कि पुरुष मित्रों की भूख भी बदल डालती थीं. हर पुरुष पर आसानी से छा जाती.

ग़ज़ल

पग–पग कष्ट अपार मिले,
गुल मॉगे थे, ख़ार मिले।
जिसके मन में आग जले,
कैसे उसे करार मिले?
पाप से मुक्त हुआ न मन,
कैसे मुक्ति का द्वार मिले।
संद्‌भावों की ज्योति कहॉ?
तिमिरावृत्त मिनसार मिले।
झूठ उड़ाता मौज यहॉ
सच को कारागार मिले

जलाल अहमद खॉ 'तनवीर'
बाराबंकी, उ.प्र.

दूसरी ओर डिवोर्स हो जाने के बाद पिताजी भी मॉ और मेरे सामने ही अपने स्त्री मित्रों को घर ले आते. उनके साथ सोते, बैठते और घर में ही रंगशाला खोल लेते."

एकमात्र पुत्र पर प्यार जताने की पापा मम्मी में अलग–अलग ही कायदे थे. यहॉ भी होड़ जारी थी, स्कूली जीवन से कालिज जीवन तक. बनावटी प्यार के जलसे बाजी से अंबर थक जाता था पर माता पिता इसे नैतिक कर्तव्य का चोला पहना देते थे और इसके जरिये अपने आप ही ओहदा पाये हुए सोचने लगे थे. बैंक बैंलेस अंबर को नई खुशियों का अहसास दिलाने लगा, जो बेनकाब विमृत रास्तों से आने जाने लगे और तब से अम्बर उर्फ मैं छुटपन में प्राब्लम चाइल्ड और यौवन में फ्रस्टेटेड गाई' के नाम से माना जाने लगा. तब मैं अप्रकृतिस्थ मानसिक स्थिति में शराब में धुत हो दो–तीन लड़कियों को एक रात में झेल लेता था.

इतनी कहानी कह लेने के बाद अंबर क्षण भर चुप था. ऋषभ ने पिछली रात अंबर की एक दूसरी ही प्रेम कहानी सुनी थी. प्रेम, जहॉ कोई धोखा न था, ऐसा प्रेम जिसे अंबर डूबते तिनके का सहारा समझ बैठा था. जिसे अम्बर कभी न खोने की इच्छा से डरकर भाग आया था. साधुओं का भेश धरे गोरी चमड़ी वाले साधुओं की भीड़ में अपने को छुपाये, इतनी दूर सैलानियों में भाग आया था. अम्बर अब जीतने की पूरी आषा संजोये था. हारा थका सिपाही अब विद्रोही नहीं प्रेमी था, जिन्दगी की हर चीज सुनहरी बनने को थी, कि अंबर की सारी सुख दुख की अनुभूति अंधी गली में जा भिड़ी और अब वह सुन्न सा कुछ महसूस कर रहा है, या एक लकवाग्रस्त का सा जीवन बिता रहा है......

अम्बर चुप था

फिर क्या हुआ? कहो न. कह डालो. ऋषभ ने अंबर को ठेलते हुए कहा. घुघराले बालों वाला दक्षिणी युवक–अम्बर एक मराठी लड़की से प्रेम करने लगा था, जो स्कूल टीचर थी–मंदाकिनी. इसी लड़की को जानने के बाद से, बहुरमण, मद्यपान जैसे भयंकर नशे भी दूर भाग गये थे– जाने अनजाने में. स्वस्थ सुंदर जिन्दगी के सारे वादे हो चुके थे. 'फिर? फिर पता नहीं क्या हुआ? एक दिन अचानक पता चला बिल्कुल सन्नाटा छा गया. कोई नहीं बोल रहा था. ऋषभ ने झकझोरा–

"अंबर, अंबर, हॉ तो अचानक क्या हुआ?"

"उसे, मतलब मंदाकिनी को, एडस हो गया था. जॉच के बाद यह भयंकर समाचार पाते ही मैं भाग खड़ा हुआ था. मुझे अब मंदाकिनी के साथ नई जिन्दगी बिताने का इतना मोह हो गया था कि मै घबड़ाकर केवल भागता रहा. मुझे डर था उसके साथ रहकर यह रोग मुझमें आ जायेगा."

ऋषभ–मंदाकिनी, अच्छी लड़की नहीं थी क्या?

अंबर–इतनी अच्छी थी कि उससे बेहतर और कोई हो न सके.

ऋषभ–तो फिर कैसे.....

अम्बर–अब फूट फूट कर रो पड़ा. मैं कई सालों तक अपने से भागता रहा, भागता रहा. आखिर यहॉ आने के बाद मैंने बहुत डरते हुए अपनी जॉच करवा ही ली...पुनः दोनों चुप थे. ऋषभ ने अपने कठोर हाथों से सांप के पेट सा अंबर की ठंडी देह को छूआ. अंबर काफी रुखाई से बोला,"हॉ, हॉ" यह सच है–"मुझसे ही उसमें यह बीमारी संक्रमित हुई थी. मैं पापी हूँ."

पहाड़ी क्षेत्रों में आंधी पानी का कोई समय निर्दिष्ट नहीं होता. दोनों चुपचाप दो कछुए की भांति चित्त पड़े थे. अचानक जोर से आंधी उठी. ऋषभ अपने क्वार्टर में जाने को उद्यत हुआ. जाते–जाते वह अंबर से कह गया–"सब कुछ इलाज से ठीक हो जायेगा. कारण दो एड्स के मारे व्यक्ति आपस में शादी के बंधन में बंध कर एक दूसरे का सहारा बन सकते है." मैं तुम दोनों को मिलाकर छोड़ूगा." पर ऋषभ स्वयं नहीं जानता था कि वह कितना और क्या कर सकता है. बस एक आशा की चिन्गारी, एक आत्म विश्वास का चिराग जलाने के लिए, बहुत दूर तक वह यही रटता हुआ चला गया. चीड़ की पत्तियों में वही वाक्य सॉय–सॉय की धुन में गूॅजने लगी. दूसरे दिन देर से नींद खुली तो ऋषभ ने अखबार उठाया और सरसरी निगाह डाली. पहले ही पेज पर एक ऊँधे हुये गेरुवे धारी साधु का चित्र वादियों से चिपका छपा था, जिसके नीचे बयान था–देर राज आज एक गेरुवे धारी योगी पुरुष ने आत्महत्या कर ली है. दो वादियों के बीच उस महापुरुष का नश्वर देह पड़ा मिला. सुनने में आता है हिप्पियों के टोली में आया था. ईश्वर की खोज में उन्माद बना वह एक साधू था जो ईश्वर की खोज में उसी का हो लिया है.

ऋषभ को उस समय तक चीड़ की वादियों में सुनाई दे रही थी.

पुनर्विचार

आओ, अपने संबंधो पर,
पुनर्विचार करें
थोड़ी–सी कलह
थोड़ी–सी प्रीत भरें।

आओ, मन पर लगे नियंत्रण हटाएं
थोड़ी चुप्पी साधें
थोड़े शब्दों के वार करें।

आओ, सपनों से आंख–मिचौनी रचाएं
थोड़ी इच्छांए पतझर
थोड़ी बहार करें।

आओ, आसक्ति से विरक्ति में उतराएं
थोड़े क्षण उदास
थोड़े त्यौहार करें।

आओ, अपने संबंधो पर पुनर्विचार करें
थोड़ी–सी कलह
थोड़ा प्यार करें।

राजकुमार जैन 'राजन',
आकोला, राजस्थान

प्रखर व्यक्तित्व के धनी: श्री बुद्धिसेन शर्मा

✍गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

२६ दिसम्बर १९४१ कानपुर में जन्मे श्री बुद्धिसेन शर्मा किरोरावस्था से ही काव्य में रूचि रखने लगे थे. शिक्षा ग्रहण करने के बाद, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन कानपुर, व कलकत्ता से आरंभ किया, कराया. किंतु बार-बार आर्थिक कठिनाइयों के कारण, उन्हें बंद करना पड़ा. अनेक पत्र-पत्रिकाओं तथा स्मारिकाओं का सम्पादन भी किया। शुरू में दोहे, सवैया, घनाक्षरी, छप्पय, कुण्डलिया, मालिनी, बरवै, सोरठा, चौपाई आदि मात्रिक-वर्णिक छन्दों से लेकर गीत, प्रगति आदि नाना विधाओं में काव्य-रचना की। ''नयी कविता-१९७१" (संपादकः डॉ० जगदीश गुप्त, विजय देव नारायण साही) में स्वीकृत-समादृत, सम्मिलित हुई. काव्य के अतिरिक्त कहानी, नाटक, रेडियो-रूपक, निबंध, समीक्षा आदि प्रायः सभी विधाओं में लेखनी करने वाले श्री बुद्धिसेन शर्मा धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, कादम्बिनी, नवनीत तथा अन्य प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में अक्सर प्रकाशित होते रहे हैं तथा आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रो द्वारा समय-समय पर प्रसारित होते रहे हैं. १९९१ से आपके पुरस्कृत होंने का सिलसिला भारत के उप-राष्ट्रपति महामहिम डॉ. शंकर दयाल शर्मा के कर-कमलों द्वारा ''साहित्य श्री'' अलंकरण से प्रारम्भ हुआ, १९९१ में ही मक़तब-ए-ग़ौरो पिक प्रयाग, १९९५ में भारती परिषद प्रयाग द्वारा सम्मान, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा १९९५ तक अनवरत जारी रहेगा। जो आगे भी जारी रहेगा ऐसी आशा है। यह इस महान विभूति की कलम की

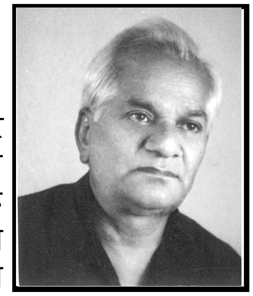

धार से दिखता है। १९७५ से निरन्तर गज़ल-लेखन भी कर रहे है। जिनका प्रकाशन अनेक पत्र-पत्रिकाओं में होता रहता है। कवि-सम्मेलनों के मंचों और मुशायरों के लोकप्रिय कवि एवं शायर के रूप में विख्यात अर्जित कर चुके श्री बुद्धिसेन शर्मा साहित्य जगत में अपना एक अलग मुकाम बना चुके है. आप ऐसी ही हिन्दी साहित्य जगत को अपनी लेखन विधाओं से अलंकृत करते रहेगें। ऐसी पत्रिका परिवार को आशा है।

++++++++++++++++++++++

गीत

हे नन्द-नदंन हे गिरधारी
इस बार धरा पर आ जाओ।
आतंक मच गया है भू-पर,
फिर शान्ति ध्वजा फहरा जाओ।
हर युग का कष्ट हरा तुमने,
कलि से आतंक मिटा जाओ।
हे नन्द नदन हे गिरधारी
इस बार धरा पर आ जाओ।
थी हा हाकार मची भारी,
चहुँ ओर मची थी लाचारी।
दुष्टों के चंगुल में फंसकर,
व्याकुल थी वसुधा बेचारी,
तब तुमने आकर कष्ट हरें।
वैसे ही कष्ट मिटा जाओ,
हे नन्द नदन हे गिरधारी
इस बार धरा पर आ जाओ।
क्या विकट काल ये आया है
इंसान बहुत बौराया है।
अब कंस और रावण से भी
बढ़कर उत्पात मचाया है।
मच गई त्राह-त्राहि भारी,
फिर अमन चैन बिखरा जाओ।
हे नन्द नंदन हे गिरधारी
इस बार धरा पर आ जाओ।

डॉ. मोहन आंनद, भोपाल,म.प्र.

++++++++++++++++++++++

प्रेम

प्रेम कहो किसने पहिचाना?
मैं नहीं जाना, तुम नहिं जाना, ये नहिं जाना, वो नहिं जाना
कहो कौन फिर जाना?
यह पहुंचाता उच्च शिखर पर
जैसे बादल हो हिमगिरी पर
लेकिन मारग कठिन कठिनतर जो पहुँचा सो जाना
इसमें शूली अरु सिंहसान
आग का दरिया स्नेह का सावन
करना पड़ता सर्व समर्पण
बनकर बस दीवाना।
मन से मन का इसमें नाता
निस्पंदित संजीवनि पात।
नारद ने भी इसको भ्राता
अनिवार्चनिय माना
वेद पुराण उपनिषद सारे
इसमें जनमें भाव संवारे
यदि चाहें कल्याणा
जब यह ऊर्ध्व गति को पाता
मरुस्थल वृन्दावन बन जाता
और वही जब प्रिय मिल जाता
जग लगता बेगाना.
प्रेम कहो किसने.....

प्रमोद पुष्कर, भोपाल

कुछ दिन आराम करुंगा

यदि मैं मर जाऊं तो तुम दूसरे दिन ही शादी कर लोगे. एक हीरोइन ने अपने पति से पूछा.
पति ने कहा-नहीं डार्लिग-पहले कुछ दिनों तक आराम करुंगा.

बहुमुखी प्रतिभा के धनी करनैल सिंह उर्फ सरदार पंछी

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

१४ अक्टूबर १६३४ को ग्राम-ठट्टा, बहादुर शाह, जिला-शेखूपुरा-पाकिस्तान में स्व. एस.फौजी सिंह 'बिजला' (प्रसिद्ध पंजाबी कवि एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी) के घर जन्में सरदार पंछी की शिक्षा मैट्रिक,गियानी-हानर इन पंजाबी, वैकल्पिक विषय परसियन, प्रभाकर-ऑनर इन हिन्दी, वै०विषय-संस्कृत, अदीब कामील-आनर इन उर्दू, वै० विषय - परसियन में हुई आपने श्रीमती आतिया परवीन की पुस्तकों प्यार का बंधन, जिसको समझे थे मसीहा, रागे जान से करीब, बहारे फिर भी आती है, निगाहों के चिराग तथा श्रीमती बुशरा रहमान की किस मोड पर मिले हो का हिन्दी एवं पंजाबी में अनुवाद किया है. १६८०-८४ तक अवध मेल साप्ताहिक के संपादक, मालिक व प्रकाशक रहे. साथ ही साथ जबलपुर पत्रिका-जबलपुर, दैनिक आज -इलाहाबाद, दैनिक जनमोर्चा-लखनउ में संवाददाता के रुप में भी कार्य किया है. आपने फिल्म एक चादर मैली सी, वारिस के लिए गीत भी लिखे है तथा लेके हाथों वीच हाथ, आए बारात में, ६ ाारावाहिक-पंचर ते पंचर-दुरदर्शन केन्द्र, जबलपुर का निर्माण किया है. साथ ही साथ सुनेतर, जानकी, शराब,अपना दमन अपनी आग, रानी बनी भवानी, हिन्दी टेली फिल्म, रुप धारा, नेहरु आया बार-बार, हिंदी ६ ाारावाहिक, शराब धरम पंचायत, पौह फुटला-पंजाबी टेली फिल्म के लिए स्क्रीन प्ले, डायलाग व गीत लिखे हैं. आपको अब तक शिरोमणि उर्दू साहित्यकार अवार्ड-२००१, भाषा विभाग २००१, प्रो० मोहन सिंह अवार्ड-प्रो० मोहन सिंह फाउन्डेशन १६८५, लुधियाना,सरस्वती सम्मान, सम्मान-एस.कॉलेज आफ वोमेन, मोगा, राजकीय कॉलेज फार वोमेन, मोगा, कला स्मृति-लुधियाना, रचना बिहार मंच, प्रगति कला केन्द्र, संहित लगभग ३० संस्थाओं से सम्मान मिल चुका है. आपने दुबई, दोहा कतर, पाकिस्तान व अमेरिका में कई बार काव्य, मुशायरों में अपनी सहभागिता निभायी है. अभी तक आपकी लगभग १८ पुस्तकें देवनागिरी, गुरमुखी, फारसी, उूर्द, हिन्दी में प्रकाशित हो चुकी है. उनमें मुख्य है-मज़दू की पुकार, सॉवले सूरज, टुकड़े टुकड़े आईना, दर्द का तर्जुमा, क़दम क़दम तन्हाई, अधूरे बुत, नक़्श-ए-क़दम, शिवरंजनी, पंछी दी परवाज़, गुलिस्तान-ए-अक़ीदत, बोस्तान-ए-अक़ीदत, मेरी नजर में आप, उजालों के हम सफ़र, वंझली दे सुर, कुर्बानियों के वारिस, अनुकृति, खाके, रंग और मैं प्रमुख है.

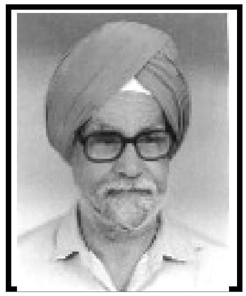

देखो समय बदल रहा है

अपना अपनों को छल रहा है
देखो, समय बदल रहा है।
लगे हैं एक दूसरे की होड़ में,
कोई दूसरे पर जल रहा है।
लगे हैं कोई लू में कोई छू में,
कोई जले पर नमक छिड़क रहा है।
देखो, समय बदल रहा है।।
नहीं ठहरता था कभी नीबू नाक पर,
सूरज आज उसी का ढल रहा है।
लगे हैं अपनी स्वार्थसिद्धि में,
मूंगछाती पर किसी की दल रहा है
देखो, समय बदल रहा है।।
भला क्या करेगा कोई किसी का,
जो दूसरों के टुकड़ों पर पल रहा है
देखो, समय बदल रहा है।।

रामचन्द्र राठौर,शाजापुर, म.प्र.

जब मै देखता हूँ.

जब
मै देखता हूँ
अपने आसपास का माहौल,
तो मुझे लगता है कि
मैं इंसानो की बस्ती से
निकलकर
जंगल में आ गया हूँ।
जहाँ
आदमखोर जानवर
मानवता को नोंच-नोंच कर
खाने में लगे हैं।
मैं
निपट अकेला,
यह खूनी मंजर,
देखे जा रहा हूँ।
सहसा
उनके खूनी पंजे,
मेरी ओर बढ़ते हैं
मेरे शरीर में,
एक ठंडी सी सिहरन,
दौड़ पड़ती है और
मेरी रूह कांपने लगती है।

रोहित यादव,अटेली, हरियाणा

++++++++++++++++++++

अग्नि परीक्षायें

रामचरण यादव, बैतुल

सृष्टि की विविध आर्कषक वस्तुओं एवं श्रेष्ठतम उपादनों का सृजेता, अनादि सत्य, प्रेम तथा करूणा जैसे पावन मनोभावों का भंडार होते हुए भी ईश्वर अपनी बनायी इस दुनिया से चकित है. जब-जब इस संसार में पाप का अंधकार फैला, लोग स्वार्थ संकीर्णता के मोहपाश में आबद्ध हो अपने कर्त्तव्य और धर्म से विमुख हुए, ईश्वर को स्वयं आना पड़ा. अब तक के जीवन काल में घटित हो चुकी घटनाओं का सिंहावलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है, कि असुरी प्रवृत्तियॉ सृष्टि रचना के श्रीगणेश से ही मनुष्य स्वभाव में ऐच्छिक परिवर्तन कर, इनमें दैवीय गुणों के प्रकृति प्रदत्त अधिकारों पर निर्ममता से घातक प्रहार करती आयी है. कलिकाल के मानव का वैश्विक स्तर पर इन अन्याय सम्मत् प्रहारों से विचलित होकर दुगुणों का दास बन जाना स्वाभाविक है, किन्तु देर सबेर इस शांति युद्ध में सतोगुण विचार सत्तायें सबल होकर कलियुगीन असत्य पक्ष एवं उसकी मुट्‌ठी भर सहायक शक्तियों को काल का भोजन बन जाने के लिए विवश कर देंगी.

भौतिक जगत का अंधकार जो स्वयं के प्रकाशमान होने की मृगमरीचिका से हर्षित हो अट्‌टहास कर रहा है. अपनी पराजय स्वीकार करते हुए उनके समक्ष आत्मसमर्पण कर देगा एवं अन्ततः धर्म की स्थापना के दुर्लभ क्षण निकटस्थ होंगे. देहभिमान के चलते लोग यदा कदा मिथ्या दंभ भरने लग जाते है, जिससे चहुँ ओर संक्रमित हो रही अनाचार प्रेरित विपतायें कुकुरमुत्तों के मानिन्द उग आती है. साम्प्रदायिकता की कॅटीली विषैली वनस्पतियॉ समाज ही नहीं वरन समुचे विश्व को दूषित करती है. जब तक समस्त मानव जाति को अज्ञानता के बाहुपाश से पूर्णतः विमुक्त कर यथार्थ ज्ञान नहीं कराओगे तब तक अटल अविरल सुख सुविध ााओं से युक्त सुन्दर संसार की कल्पना करना व्यर्थ ही है.

आज जरूरत है ऐसे शूरवीरों की जो संस्कृति की रक्षा करने में अग्रणी बने, क्योंकि दिन प्रतिदिन यहॉ नैतिक मूल्यों का हास हो रहा है जो भयानक सिद्ध हो सकता है. हम कैसे भूल सकते है शिशुपाल द्वारा सभा मण्डप में कहे गये अश्लील अनर्गल शब्द, कंस द्वारा माता देवकी के लिए संबोधित करती अपमान जनक टिप्पणियॉ, दुशासन द्वारा द्रोपदी चीर हरण, राधा कृश्ण के सम्बन्धों को दुष्ट मण्डली द्वारा आरोपित विकृत सम्भाषण, सब कुछ भली भॉति स्मरण है और फिर ये तो कलियुग है. कॉटो भरे रास्ते पर चलकर हमें हर काल में अग्नि परीक्षायें देनी पड़ती है. शनैः शनैः यौवनकाल की ओर अग्रसर हो रहे बालकों किशोरियों को सचेत करने के उद्‌देश्य से यह सूक्ष्म संकेत दिया जा रहा है.

भविष्य को उज्जवल बनाने के पहले हमें वर्तमान को सॅवारना होगा. प्रतिभाशाली, तेजस्वी, सहृदय संपन्न तथा लोकहिताय सर्वस्व अर्पित करने हेतु प्राणप्रण से कष्त संकल्प देवपुत्रों को असत्य, अधर्म के विरूद्ध धर्म के स्थापनार्थ एक विशाल पैमाने पर संगठित करना होगा, फिर कालान्तर में उनके दिव्य ओजस्वी विचारों से आपूरित गरिमामयी व्यक्तियों से संघर्शरत सत्य को साधारण समझबूझ रखने वालों एवं बुद्धिजीवी वर्ग दोनों में ही वैचारिक समर्थन होने लगेगा. अन्ततः मेरा एक मात्र स्वप्न यथार्थ का रूप धारण कर ही लेगा. रामराज्य की कल्पना को साकार करने का अधिकार सरकार का नहीं अपितु भारत के हर एक नागरिक का है. स्वर्ग से सुन्दर यह संसार बने यही मेरी इच्छा है. इसके लिए चाहे जितनी अग्नि परीक्षायें देनी पड़े, देने को तैयार रहें.

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा प्रकाशित पुस्तके

1.मधुशाला की मधुबाला :लेखकःराजेश कुमार सिंह मूल्य 10.00
2.अपराध लेखक : राजेश कुमार सिंह मूल्य : 10.00
3.सुप्रभात दस रचनाकारों का संग्रह मूल्यः 10.00
4.निषाद उन्नत संदेश लेखकः चौ0 परशुराम निषाद मूल्यः 10.00
5.एक अद्‌भुत व्यक्तित्व लेखकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी मूल्यः10.00
6.रोड इन्स्पेक्टर–लघु उपन्यास लेखकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी मूल्यः 20.00
7. लर्निग कम्प्यूटर विद फन भाग–1 लेखकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी मूल्यः 45.00
8. लर्निग कम्प्यूटर विद फन भाग 2 लेखकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी मूल्यः 35.00

पुस्तकों के लिए भेजें/लिखें: मनीआर्डर/डी.डी.
सचिव, विश्व हिदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

न्याय का प्रतीक

पवन चौधरी, नई दिल्ली

वह साधारण न्यायाधीश नहीं था. उसके निर्णय न्यायसंगत होते थे. सभी द्वारा स्वीकार्य-सम्मानित भी. निर्णय सुनाने से पूर्व, वह तथ्यों की तह में डुबकी लगाता था. दूध को दूध तथा पानी को पानी के रुप में पहले स्वयं देखता था, फिर निर्णय में दिखता था.

एक फौजदारी मुकदमें की सुनवाई के दौरान, आरोपी ने आरंभ से अंत तक कठघरे में चिल्ला-चिल्लाकर कहा कि वह अपराधी नहीं है. परन्तु अभियोगी द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के आधार पर आरोपी को मृत्युदंड की सजा सुना दी. अंततः अपराधी को फांसी लगा दी गई.

कुछ दिन बाद, अपराधी न्यायाधीश के सपने में आया. उसने फिर दोहराया कि वह अपराधी नहीं था. अपराध घटने वाले समय वह जहां और जिन हालात में था, उनका विस्तृत ब्योरा दिया. उसने न्यायाधीश को विनती कि वह स्वयं सत्य की पुष्टि कर लें.

न्यायाधीश ने पाया कि अपराधी ने जो कुछ कहा था वह हू-ब-हूं वैसा था. न्यायाधीश को गहरा धक्का लगा. उसने स्वयं को दोषी पाया एक बेकसूर को फांसी पर लटकाने का. न्यायाधीश ने न्याय के हित में आत्महत्या कर न्याय को अमिट प्रतीक कहलाना बेहतर समझा.

कड़वा सच

'सर, उच्च न्यायालयों में न्यायाधीशों की नियुक्ति के लिए वकीलों में से आपके सर्वश्रेष्ठ एवं बार एसोसिएशन तथा समाज के सर्वश्रेष्ठ में अंतर क्यो है? इंसाफ ने प्रधान न्यायाधीश से जानना चाहा.

'देखिए, हमारे पास अपना कोई स्वतंत्र साधन नहीं है, यह जानने के लिए कि कौन वकील जज बनाने योग्य है. हमें तो उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीशों की सिफारिशों पर निर्भर करना पड़ता है. मुझे क्या पता कि आन्ध्र प्रदेश में कौन वकील योग्य है, न्यायाधीश पद के लिए. मैं तो वहां जा नहीं सकता!' न्यायाधीश महोदय ने सफाई दी.

'सर, मैं तो दिल्ली की बात कर रहा हूॅ. दूर-दराज प्रदेश की नहीं. सन् १९७० से आज तक की लम्बी अवधि में, मुख्य न्यायाधीश की पसंद को वकीलों, जजों एवं समाज ने नापंसद किया है. ऐसा क्यों? 'सर, एक और बात कहने की अनुमति चाहूंगा.' 'कहिए?'

'कोई भी ईमानदार, परिश्रमी एवं स्वाभिमानी वकील न्यायाधीश बनने के लिए आपके पास नहीं आएगा. आपको उसे ढूंढना होगा. संविधान में योग्य वकील को न्यायाधीश नियुक्त करने का दायित्व आपका है, उच्च-न्यायालयों के प्रधान न्यायाधीशों का नहीं. और, यदि आप इस दायित्व का निर्वाह करने में असमर्थ है, किसी भी कारणवश, तो इसका त्याग कर दीजिए.'

'इंसाफ, बाहर और लोग भी मुझसे मिलने की प्रतीक्षा कर रहे है.' निरुत्तर न्यायाधीश ने कहा.

'सर, मैने जो कहना था सो कह दिया. आज्ञा चाहता हूॅ.'

++++++++++++++++++++++++++++++++++

कोई मेरे बच्चे खरीद लो

डॉ0 मोहन तिवारी 'आनंद'

एक औरत अपने पति के पैरों से लिपटी हुई चीख चीख कर रो रही थी. उसका पति पैर छुड़ाने की कोषिष कर रहा था. औरत घिसटती जा रही थी.

औरत की चीख-पुकार सुनकर लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गई थी. औरत के कपड़े अस्त-व्यस्त हो गए थे. उसने एक नन्हा सा बच्चा अपने आंचल से चिपटा रखा था. भीड़ तमासाबीन बनी देख रही थी. पति-पत्नी की छीना झपटी में ऑचल में लिया हुआ बच्चा छुटककर जमीन पर गिर पड़ा. बच्चा जोर-जोर से रोने लगा. वहीं पास में उनके और बच्चे भी खड़े हुए, मॉ-बाप की छीना झपटी देखकर रो रहे थे. मासूम बच्चे को जमीन में गिरा देख एक बुजुर्ग व्यक्ति भीड़ से बाहर आया और चिल्लाकर बोला-"खबरदार! रूक जा." बुजुर्ग व्यक्ति की डॉट सुनकर वह व्यक्ति रूक गया.

"क्यों किस बात पर झगड़ा कर रहे हो तुम?" बुजुर्ग ने कड़क आवाज़ में पूछा.

"काका, ये घर छोड़कर भाग रहे हैं." औरत ने कहा.

"क्यों भाई! तुम क्यों भाग रहे हो?"वह चुपचाप, सिर लटकाए खड़ा रहा, फिर मौन तोड़कर बोला-"मेरे बस का नहीं रहा इस घर का खर्चा चलाना. इतनी मंहगाई और चार-चार बच्चे."

"ये तो कोई बात नहीं हुई. ये तो तुम्हें पहले सोचना था." बुजुर्ग ने कहा. उपस्थित भीड़ में से कुछ लोग हंस पड़े.

"मुझे क्या सोचना था, बच्चे तो इसी ने पैदा किये है. ये जाने इसका काम." उसकी बात सुनकर लोग भैाचक्के रह गए. औरत ने उसे छोड़कर अपने बच्चों को इक्ट्ठा किया, तथा जमीन पर पड़े बच्चे को उठाया पुचकारा और भीड़ की ओर देखती हुई बोली-"भाइयो-बहनो, आप में से किसी को बच्चों की जरूरत हो तो आगे आइये. मेरे बच्चे बिकाऊ हैं." भीड़ अपने आप घटने लगी. वह व्यक्ति मुॅह लटकाए धीरे-धीरे घर की ओर चल दिया.

होली: कवियों की दृष्टि में

दुर्गा चरण मिश्र, कानपुर

भारतीय संस्कृति में व्रतों, पर्वो एवं त्योहारों का विशिष्ट स्थान है. होली का त्योहार तो जन-जन में उमंग उल्लास को जाग्रत करने में सदैव अग्रणी रहा है. वर्तमान समय में मंहगाई ने त्योहारों पर अपनी घनी छाया अवश्य डाला है, लोग होली को धन और समय का अपव्यय समझने लगे हैं, तथापि बसंत आते ही ऋतु परिवर्तन सभी का ध्यान आकृष्ट करता है. खेतों में पीली-पीली सरसों, आमों में सुगन्धित बौर, वृक्षों में नव पल्लवों का आगमन, और सुहावना मौसम भला किसे सम्मोहित नहीं करेगा? चतुर्दिक ताजगी और मस्त फागुनी बयार का स्पर्श कर मानव-मन खिल उठता है-

मधुमास में हर द्वारा चहक जाते है
कलियों के साथ कॉटे भी महक जाते है।
फागुनी बयार की बात मत पूंछो ऐ दोस्त,
बच्चे ही नहीं बूढ़े भी बहक जाते है.

रामकुमार त्रिपाठी

कवियों और साहित्यकारों ने होली के सम्बन्ध में अपने भाव बहुतायत से प्रकट किये है. स्मृति शेष डॉ० शिवमंगल सिंह 'सुमन' कहते है-

आज कहॉ से फिर आ पहुँचा फागुन में सावन
सुबह उठी थी धूल शाम को घिर आये बादल,
बासंती रातों में बरसा फिर आंखो का जल।

होली मिलन का पर्व है. ऊँच-नीच, परिचित-अपरिचित कोई भेद नहीं-

आजादी है जिसको चाहो,
उसे आज वर लो,
होली है, तो आज,
अपरिचित से परिचय कर लो

डॉ० हरिवंश राय 'बच्चन'

मानवीय दुर्बलताओं का विनास कर सदाचार रुपी तरु पुष्पित पल्लवित होने की कामना देखें-

स्वार्थ-द्रोह-ईर्ष्या-लोलुपता-पैशुन का पतझड़ होने दे
परहित प्रेम त्याग सहृदयता सद्भाव बीज बोने दे।
आशाओं कें अुंकुर निकले,
सदाचर तरु खड़ा सरल हो
सुकृति मंजरी सुख फल लावे,
तब होली का पर्व सफल हो।

डॉ० मुशी राम शर्मा 'सोम'

होली में आपसी बैर, अपने शिकवे-शिकायते दूर कर गले मिलने का परामर्श देखिए-

मिटा दो आपसी दर्दे-मलाल होली में
मिटा दो मन के सभी खामों-ख्याल होली में।
गले मिलने में न ऊँच-नीच का विचार करो
मिलेगें फिर से गले पारसाल होली में।

शिव गोपाल मिश्र

होली में बनारस का असली रंग हास्य रसावतार से सुनिए-

न ऐटम का पता होगा,
न हाइड्रोजन ही निकलेगा
हमारा देख लेगें वह अगर,
हथियार होली में।
न वह हथियार है कुछ भी,
फकत गाली हमारी है,
इसी को देखने लायक,
हुई बौछार होली में।
यही अ र र र हमारा
बेधड़क हथियार अपना है
नहीं लैसन्स की होती
कभी दरकार होली में।

बेधड़क बनारसी

बिरही लोगों को होली कष्ट कारक होती है. एक विरहणी को तो केसर की पिचकारी भी जलाती है-

कन्त बिन वासर बसंत जागे अंतस से
तीर ऐसे त्रिविध समीर लागे लहकन।
अंग-अंग आगि ऐसे केसर को नीर लागे
चीर लागे जरन, अबीर लागे दहकन

कविवर देव

वैसे तो सम्पूर्ण ब्रज की होली प्रसिद्ध है, परन्तु बरसाने की होली की बात ही कुछ और है-और होली तो होली बस होली बरसाने की' ब्रज की होली का एक चित्र देखे-

आजु ब्रज में हरि होरी मचाई
बाजत ताल मृदंग झांझ-ढप, मंजीरा, शहनाई
उड़त गुलाल लाल भए बादल रहे
सकल ब्रज छाई.

सूरदास

होली की चर्चा हो और उसमें राधा-कृष्ण की बात न हो यह संभव नहीं. ब्रज की होली का एक सजीव चित्र देखिए-

फागु की भीर अभीरन में गहि गोविन्द
ले गई भीतर गोरी,
भाई करी मन की पदभाकर ऊपर नाइ
अबीर की झोरी।

मूख्र कहां है

नौकर मालिक से-आपके जिगरी दोस्त का फोन आया था.
मालिक-तुम्हें कैसे मालूम कि फोन मेरे जिगरी दोस्त का था.
नौकर-वह पूछ रहे थे मूर्ख कहां है?

++

महेश जी फिल्म समीक्षक से-आप ने खुद तो कभी फिल्म बनाई नहीं. आप समीक्षा कैसे लिखेंगे?
फिल्म समीक्षक-जनाब, मैं कभी मुर्गी की तरह अंडे दे नहीं सकता, लेकिन आमलेट के बारे में आपसे ज्यादा जानकारी रखता हूँ.

छीनि पिताम्बर कम्भर ते, सुविदाई मीजि कपोलन रोरी।
नैन नचाय कहेगें मुसकाय, लाला फिर आइयो खेलन होरी। **पद्‌माकर**

इसी धारा का एक सशक्त सवैया दृष्टव्य है-

ब्याज ही ब्याज में पूरी भई,
पुनि मूल विचारि करोगे कहा?
देखत ही भरि जाऊं लला,
कनखी सो निहारि करोगे कहा?
भीजि गई मन की चुनरी,
तन पै रंग डारि करोगे कहा?
वैसेहूं नेह में बूढ़ि गई,
अब देह बिगारि करोगे कहा?
आत्म प्रकाश शुक्ल, एटा

कवियों ने होली को विभिन्न रुपों में प्रस्तुत किया है. बैसवारा के कवि महोदय नूतन होली खेलने का आवाहन करते है-

पीटो पुरानी लकीर, बनो वीर करा

नहीं गंदी ढठोली
दो सरा बोर नये रंग में,
सम भारत को मित्र के हमजोली
गाड़ दो मेल का झंडा यही पर,
फाड़ दो मोम से फूट की चोली,
धींग हो धूल न झोंकहु यों,
अब खेलहु नूतन-नूतन होली।
शिव दुलारे त्रिवेदी 'नूतन'

संस्कृति का श्रृंगार करने तथा 'सत्यं शिवं सुन्दरम्‌ की शाश्वत मंत्र का उद्‌घोष करते कवि कहता है-

घर आंगन बाहर वातायन रंग दो अब फगुहारों,
लपटों से प्रहलाद निकालो, संस्कृति पुनः संवारो।
गगन धरा सब एक रंग हो बंधे सुरभि की डोरी
पहन प्रेम की साड़ी आए, मानवता की गोरी।
सत्यं शिवं सुन्दरम्‌ का शुभ, मंत्र पुनः दुहराओ
नया रंग हो नया संग हो, मंगल आज मनाओ।
आशुकवि जगमोहन नाथ अवस्थी

होली अपने साथ ऐसी वस्तुए लाती है कि उसका मतवारिता का भान होने लगता है-

कोयल की कूक लिये, हियरा की हूक लिये;
चालों की चूक लिये, मतवारी होरी आयी आयी
टेसू के रंग लिए, सरसो के ढंग लिये,
मादक उमंग लिये, मतवारी होरी आयी।
डॉ० राम प्रसाद मिश्र

होली के आगमन पर प्रकृति पफुल्लित होती है. उस परिवर्तन को निहासे का संकेत कवयित्री देती है-

पतझड़ देख हुई थी व्याकुल,
कुछ बसन्त ने आभा दी है;
आम्र मंजरी बिहंस उठी है,
कोकिल हम जोली पायी है
निरखि सजनि, होली आई है।
सरोजलता

होली के इस सुहावन, पावन, मनभावन अवसर पर आपसी कटुता एवं वैमनस्य को तिलांजलि दे हम सब सामाजिक उत्थान और लोकसेवा की भावना को सही अर्थो में मूर्तरुप दें. यही होली की आन्तरिक भावना है.

विश्व स्नेह समाज के स्वायत्तता संबंधी विवरण फार्म-२ (देखिए नियम ६(१))

१.प्रकाशन का स्थान	: इलाहाबाद
२.समाचार पत्र की पंजीकरण संख्या	: आर.एन.आई नं.८३८०/२००१ डाक पं०सं.:एडी.३०६/२००६-०८
३. समाचार पत्र का नाम	: विश्व स्नेह समाज
४. भाषा जिसमें पत्र/पत्रिका प्रकाशित किया जाता है	: हिन्दी
५. प्रकाशन का नियत काल	: मासिक
६. क)प्रकाशक का नाम	: गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
ख) क्या भारत का नागरिक है	: हॉ
ग) पता	: एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११
७.प्रकाशन का स्थान	:एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११
८.मुद्रक का नाम व पता	: भार्गव प्रेस, बाई का बाग, इलाहाबाद
९. संपादक	: गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
९. क्या भारत का नागरिक है	: हॉ
पता	: एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११
१०. स्वामी	: गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
पता	: एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११

मैं गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी, एतत द्वारा घोषित करता हूँ कि ऊपर दिए गये ब्योरे मेरी अधिकतम जानकारी और विश्वास के अनुसार सत्य है.

प्रकाशक के हस्ताक्षर

सांस्कृतिक अभ्युदय में युवाओं का योगदान

आज का समाज पाश्चात्य भौतिक सभ्यता के प्रभाव में जकड़ गया है. जो समाज अपने पूर्वजों के पद चिन्हों को छोड़कर अन्य के पदानुगामी होकर चलने लगता है, उसकी वर्तमान व आनी वाली सतंति का पथभ्रष्ट हो जाना सहज है. विदेशी विचारों का आत्मसात करके अध्यात्म की जागृति कराना कोरी कल्पना ही प्रतीत होती है. सब अपने-अपने रंग से रंगे हुए है. जिसे जो भाता है, वह उसी में तल्लीन होकर चल रहा है. छल कपट, स्वार्थ संग्रह, काला बाजारी, मिलावट, भ्रष्टाचार, बलात्कार, हड़ताल, धोखाध ड़ी अर्थात् 'झूठहि लेना झूठहि देना, झूठहि भोजन झूब चबेना.' इन्हीं का बोलबाला है.

नैतिक शिक्षा जरुरी है- युवाओं को उत्तम संस्कार प्राप्त हो इसके लिए अध्यात्म शिक्षा की महत्ती आवश्यकता है. आगम निगम पुराण, उपनिषद, शास्त्र, गीता, रामायण अध्ययन-अध्यापन अंतः करणः मन शुद्धि की शुचिता के महत्वपूर्ण घटक है. यह तभी संभव है, जब नैतिक शिक्षा का अध्यापन अनिवार्य हो. युवाओं को संस्कृत भाषा का भी ज्ञान होना चाहिए. उन्हें इसके लिए वर्तमान शिक्षा विषयों के साथ-साथ धार्मिक ग्रंथों का भी अध्ययन करना चाहिए. कॉमिक्स, उपन्यास, अश्लील साहित्य का पढ़ना बुद्धि का पतन करना है.

स्वाध्यायी बने-अध्यात्म का अर्थ आत्मा का साक्षात्कार करना है. यह तभी संभव है जब युवा वर्ग स्वाध्याय का दृढ़ता से पालन करें. इसके लिए युवाओं को ब्रहमचर्य का पालन करना होगा. ब्रहममुहूर्त में जागकर एकाग्रचित्त हो भगवान नाम जप, ईश्वर चिंतन, मनन करना होगा. बड़ों का सम्मान उनका आशीर्वाद प्राप्त करना भी जरुरी है. वाणी का संयम होना आवश्यक है, नपीतुली भाषा में बात करने से अनावष्यक असत्य से बचा जा सकता है.

अर्न्तमुखी बने-अध्यात्म के लिए जितेन्द्रियता का महत्वपूर्ण स्थान है. यह तभी साध्य है, जब युवा वर्ग अपनी रसेन्द्रिय को काबू में रखे. व्यर्थ का चटोरापन मन बुद्धि को विकार ग्रस्त कर देता है. इससे बेचैनी ही बढ़ती है. मुख्य बात यह है कि बाहरी विषयों को त्यागकर अर्न्तमुखी होना है. तब कहीं युवाओं का अध्यात्मक लाभ प्राप्त हो सकता है.

पर्यावरण को अपनावे- इन्द्रियजनित सुख क्षणभंगुर है, आदि अन्त वाला है, शाश्वत नहीं है, अतः युवावर्ग इसका चिंतन न करें. युवाओं को शुचिता का भी विशेषा ध्यान रखना होगा. शारीरिक स्वच्छता के साथ-साथ मन बुद्धि एवं कर्त्तव्य की शुचिता. स्वयं का घर पास पड़ोस का वातावरण स्वच्छ रखें. इसके लिए युवा अपना दल बनाकर बाहरी पर्यावरण को स्वच्छ रखने में सहयोग दे सकते है. अध्यात्म के लिए शुद्ध वायु का संचरन आवश्यक है. प्राणवायु अधिक मात्रा में मिलेगी तो मन प्रसन्न रहेगा. प्राण उर्जावान होगा, उदासी निराशा नहीं रहेगी. प्रसन्नता एक ऐसा प्रेय है कि जिससे चेहरे में चमक झलकती है.

कृषि उद्योग में रूचि बढ़ावे- अन्न से सभी प्राणियों की उत्पत्ति होती है. अतः युवकों को गॉव में जाकर कृषि कार्य अपनाकर अन्न, फल, सब्जी आदि का उत्पादन बढ़ाकर इनसे सम्बन्धि त उद्योगों को प्रोत्साहन देना चाहिए.

राजस्थान

इससे ग्राम विकास के साथ-साथ शहरो में बढ़ती आबादी की समस्या का भी समाधान होगा.

वर्षाकाल में पूर्व जहॉ तहॉ खाली पड़ी भूमि में फलदार उपयोगी पौधे लगाकर प्रकृति को सुन्दर बना सकते है. जैसे किसान खेत के अंदर जंगली पौधों को उखाड़ अलग फेकते हैं, ताकि उत्पादन भरपूर हो. उसी प्रकार मानव मन में मोह, मद, मान, कामवासना रूपी खरपतवार प्रकट होते है. अध्यात्म में यह जरूरी है कि इन विकारों को मन से त्याग करें. युवाओं को इससे प्रेरणा लेकर आधुनिक महानगरों में फैली फैशन की ओर आकर्षित नहीं होना चाहिए.

गौ सम्वर्धन के लिए समय देवे- फालतू समय में युवाओं को गौ पालन करते हुए गौ सेवा का लाभ भी प्राप्त करना चाहिए. गौ सेवा से जो लाभ होते है उन्हें युवा वर्ग भली भॉति समझते है. शुद्ध दूध, शुद्ध घी का सेवन शारीरिक क्षमता को बढ़ाते हैं. अध्यात्मक की दृष्टि से गौ सेवा उचित है. ऋषि मुनियों ने गौ सेवा से मनोवांछित फल पाये हैं, जमदग्नि वशिष्ठ, दिलीप की इस विषय में कथा प्रसिद्ध है. गौ सर्वदेवमयी है. गै सेवा महान पुनीत कार्य तो है ही साथ ही साथ पंचगव्य से आजकल अनेकों दवाइयों का भी निर्माण किया जा रहा है. इस क्षेत्र में भी युवक को आगे आना चाहिए तथा अपने नीजि लघु उद्योग लगाकर बेरोजगारी की समस्या को दूर करने में अपना सहयोग दे सकते है.

महिलाओं का सम्मान करें- 'मातृ देवोभव' शास्त्रों में यह प्रतिपादित किया गया है, जहॉ स्त्री जाति का सम्मान

होता है वहॉ देवता निवास करते है. दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, गंगा, कालिन्दी, रूक्मणि, सीता, राधा आदि देवियां सर्व पूज्य है. इनकी उपासना भारतीय समाज श्रद्धापूर्वक करता आ रहा है. ऐसा क्यों किया जाता है? इसलिए की हम षक्ति सम्पन्न बनें. अध्यात्म शक्ति की प्राप्ति शक्ति पूजा से प्राप्त होती है. युवाओं को 'जननी राम जाना हि पर नारी' आज बलात्कार की घटनाओं का बोलबाला हो रहा है उसे रोकना बहुत आवश्यक है.

सेवा परमो धर्म हैः वृद्ध, अपंग, असहाय, निराश्रित, रोगी की सेवा ईश्वर की सेवा है. गॉधीजी इनमें ईश्वर का दर्शन पाते थे. उनकी सेवा करना पसन्द करते थे. युवा वर्ग ऐसा कार्य कर अध्यात्म में सहयोगी बन सकते है. कहते है बालकों में ईश्वर का निवास है. वे ईश्वर रूप है. अतः युवा वर्ग फालतू समय में निःशुल्क अक्षर ज्ञान देकर बालकों को पढ़ाना लिखाना सिखा सकते है. यह कार्य अध्यात्म का एक अंग है. जीवन रक्षा के लिए औषधियों का विशेष स्थान है. युवाओं को औषधियों के उपयोग के बारे में भी जानना चाहिए एवं इसकी जानकारी देकर रोगियों को सहयोग करना चाहिए.

हड़ताल में सहयोग न देवे-आजकल जहॉ तहॉ हड़ताल, रैली, उपद्रव आदि चलते रहते है. बहुत बड़ी संख्या में युवा वर्ग इसमें सम्मिलित रहते है. इससे हिंसा आगजनी तोड़फोड़ की घटना होती है. यह निन्दनीय कार्य है. इससे युवकों को शारीरिक नुकसान, समय की बर्बादी होती एवं राष्ट्रीय सम्पत्ति की भी क्षति होती है. अतः युवा वर्ग ऐसा कुछ न करते हुए राष्ट्र निर्माण में सहयोग कर सकते है.

अश्लील सीरियल एवं नशीली वस्तुओं का बहिष्कार करें-युवावर्ग को चाहिए कि वह अश्लील फिल्में, सीरियल, फूहड़ नृत्य, गीत आदि का बहिष्कार करें. अपनी संस्कृति के अनुरुप संगीत व नष्त्य के कार्यक्रमों में भाग लेवे तथा सात्विक मनोरंजन के साधनों को अपनावें. युवावर्ग को मद्यपान, मॉसाहार, गुटखा, नषीली वस्तुओं का सेवन न करने का संकल्प करना चाहिए. युवावर्ग यदि उपयुक्त बातों पर विषेश ध यान देवे तो आध्यात्मिक चेतना जागृत होगी. सांस्कृतिक प्रदूशण समाप्त होकर परिवार सुसंस्कृत होंगे.

+++++++++++++++

सामने से हट जाओ ब्रेक भी नहीं हैं

सिपाही-मिस्टर मोटरसाइकिल रोको, इसमें लाइट नहीं है.

मोटरसाइकिल वाला-हवलदार साहब, सामने से हट जाओ. इसमें ब्रेक भी नहीं हैं.

++

अध्यापक-नीम हकीम खतरा-ए- जान, इस बात का क्या मतलब है?

छात्र-नीम वाले हकीम को जन का खतरा है.

-- --

एक लंबे व्यक्ति ने दुकान पर जाकर पूछा-यह नीबू कैसे दिए जनाब?

दुकानदार ने कहा-जरा सर झुकाकर देखिए, ये नीबूं नहीं संतरे है जनाब.

दिल को सदा दे गया कोई

चुपके से मेरे दिल को सदा दे गया कोईं।
नज़रों से ही पयामें वफ़ा दे गया कोई।।
मुरझा गया था दिल का चमन सख्त धूप में।
बरसात बनके रंग हरा दे गया कोई।।
अय दोस्त तेरी याद ही जीने का सहारा।
तारीकियों में मुझको ज़िया दे गया कोई।।
हर वक़्त खुमारी सी है हर पल है बेखुदी।
मुझको ये जागने की सज़ा दे गया कोई।।
'राना' नसीब मुझ पे हुआ मिहिरवान् तो।
उम्मीद से भी ज्यादा मज़ा दे गया कोई।।

गुलिस्तान बना देते हैं

पहले तो प्यार की बातों में फसा लेते है
फिर बड़े प्यार से वो ख़ार चुभा देते है।।
रंग खुशबू का करिश्मा है ये शोख गुलाब।
शाख पे रहके ही दुनिया को सदा देते हैं।।
देश रक्षा के लिए खून बहाने की जगह।
हम लहू दंगे फ़सादों में बहा देते हैं।।
हम तो सहते है ज़माने के सितम हॅस हॅसकर।
हम नहीं वो जिन्हें हालात रूला देते है।।
अपनी फ़ितरत ही कुछ ऐसी कि 'राना' हम तो।
रेगज़ारों को गुलिस्तान बना देते है।

राजीव नामदेव 'राना लिधौरी'दीकमगढ़,म.प्र.

++++++++++++++++++++++++

ग़ज़ल

फलों में अब यहां पर रस-गंध नहीं यारो।
सपनों का जिन्दगी से सम्बध नहीं यारो।।
अब तो बहार आके गुलशन उजाड़ती है।
मौसम में अब वो मस्ती सुगन्ध नहीं यारो।।
इन्सा भटक रहे है मंजिल की आरजू में।
मंजिल से लेकिन उनका अनुबन्ध नहीं यारो।।
गीत गजल सारे सौदर्य बोध पर जो।
मानव की जिन्दगी के वो छन्द नहीं यारो।।
परिवर्तनों की कोशिश कर तो हम रहे है
कोशिश हमारी शायद हरचन्द नहीं यारो।।

ओम रायजादा, कटनी,म०प्र०

डॉ0 रवि शर्मा, नई दिल्ली

स्नेह बाल मंच

प्रिय भैया/बहिनों
आप लोगों को एक साथ कई भईया/बहनों की कवितॉए पढ़ने को दे रही हूँ. अगर अच्छी लगे तो अपनी बहन को अवश्य लिखना.

आपकी बहन
संस्कृति 'गोकुल'

मॉ

हे मॉ देख मैं कैसा,
लाचार बना हूँ।
दे विद्या का दान,
मैं तेरे द्वार खड़ा हूँ।
कर दो मॉ उपकार,
सब जन को अपनाऊँ।
झूठ कभी ने बोलूँ और,
किसी को न सताऊँ।
दे दो मॉ वरदान हमें,
जब द्वार तिहारे आऊँ।
चरण वन्दना करुँ तुम्हारी,
दर्शन तेरे पाऊँ।

नवप्रभात अग्रवाल
कक्षा-७,कोठी-रुदौली, बाराबंकी,उ.प्र.

एक बेटी का डर

मॉ
मैं नहीं बनना चाहती
मॉ
मैंने देखा है तुम्हें
अधूरे सपनो को
पलको में बन्द करके
सो जाते हुए
और भोर होते हुए
घड़ी की सुई के साथ
गृहस्थी के कामों को
निपटाते हुए
घर की
छोटी पढ़ती यादर से
बाहर निकलते पैरों को
यादर के भीतर समेटने की
अनभक कोशिश में
धुँए से नम तुम्हारी ऑखों में
अगले दिन की चिंता
मैंने साफ देखी है मां
और रात होते ही
पिताजी की ऑखों की तपिश में
तुम्हारी देह का पिघलना
मॉ होने की प्रक्रिया में
तुम्हारे एक और फर्ज का
निर्वहन
मेरी ऑखों से छिपा नही है
तुम्हारी कोख में ही
दम तोड़ती
मेरी अजन्मी बहनों की
मासूम चीखें
और तुम्हारी
बेबस खामोशी
मुझे झकझोर डालती है मॉ
अगर ऐसी ही होती है मॉ
तो नहीं बनना मुझे मां

कु० पल्लवी
कक्षा-१२,म.न.७७६, सेक्टर-१६,
फरीदाबाद, हरियाणा

++++++++++++++++++++++

वह हिन्दी ही तो है

बड़ी कोमल सरल सरिता सी बढ़े कल-कल,
बड़ी पावन सुहावन मधुमलय सी हिन्दी ही तो है।
कि समझे जब कोई ना बात या व्यवहार जीवन में,
बताती प्रेम से भर प्यार प्यारी हिन्दी ही तो है।
'निराला' के निराले रुप में है 'शक्ति' की पूजा
कि 'दिनकर' की हंसे जब उर्वशी वह हिन्दी ही तो है।
छायावाद के 'शंकर' 'महादेवी' बड़े भाये
लिखे कामायनी यामा जो चर्चित हिन्दी ही ही तो है।
गाये गान भक्ति का वतन पर हो न्यौछावर जो
लगा नारा वो जय हिन्द का सुनो वह हिन्दी ही तो है
लाखों शूल चुभ जायें मगर यह मिट नहीं सकती,
कि रह-रहकर बुलाती नेह से वह हिन्दी ही तो है।
अम्बर और धरा के गीत यह हंसकर सुनाती है,
लगाती है गले कर थाम कर वह हिन्दी ही तो है।
मुंशी प्रेमचन्द्र जी का वह होरी आज भी जीवित
कि चिंता और आंसू की कहानी हिन्दी ही तो है।
कितने लिख गये है गांव की गोरी बड़ी प्यारी,
कि मेंहदी और महावर भी लगाती हिन्दी ही तो है।
चमकती है करोड़ों रंग मे यह माल भारत के,
बताती है पता अपना सदा वह हिन्दी ही है।
कितनों ने लिखा वह दर्द जो बांधे नहीं बंधता,
हृदय की वह व्यथा उनकी सुनाती वह हिन्दी ही तो है
सुनो! हे देश के प्यारों इसे मत भूल जाओ तुम,
तुम्हारे पूर्वजों की यह धरोहर हिन्दी ही तो है।
अगर तुम भूल जाओगे कभी बहते बहावों में,
मेरी मनों उबारेगी तुम्हें वह हिन्दी ही तो है।

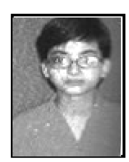

चित्रांशी श्रीवास्तव
कक्षा-८, बी/६१३, इन्दिरा नगर,
आवास-विकास कॉलोनी, रायबरेली, उ.प्र.

भईया/बहनों आप भी अपनी रचनाएं भेज सकते है. अगर अच्छी लगी तो हम अवश्य प्रकाशित करेंगें.

संपादिका, स्नेह बाल मंच

कुछ सहयोगी साहित्यकारों के परिचय

मुखराम माकड़

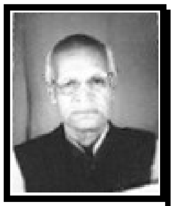

१ फरवरी १६३० को हरिपुरा, हनुमानगढ़ में जन्में श्री मुखराम माकड़ के पिताजी किसान थे. इनकी प्रारंभिक शिक्षा गॉव में ही हुई. सन! १६४१ में जाट मिडिल स्कूल संगरिया में प्रवेश लिया. स्वामी केशवानन्द जी द्वारा संचालित यह स्कूल अक ग्रमोत्थान विद्यापीठ के नाम से प्रसिद्ध है से हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की. १६४७ में इसी विद्यालय में अध्यापक के रुप में सेवा करने लगे. सेवाकाल में ही अंग्रेजी साहित्य से आपने एम.ए किया. १६५४ में राजस्थान लोकसेवा आयोग में चयनित होने पर राजकीय अध्यापक के रुप कार्य करने लगे.उप जिला शिक्षा अधिकारी के पद सेवानिवृत श्री माकड़ ने विश्वकर्मा विद्या निकेतन की स्थापना की. आपकी निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है- हिन्दी में दोहा सरसिज, हस्ताक्षर, हारा नहीं सूरज, राजस्थानी में सांगरी, झोली भरद्यो सांवरा, आपके द्वरा रचित कुण्डलियां, गजले, हाइकु, निबन्ध आदि समय-समय पर राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय संकलनों में प्रसारित होती रहती है. आपको करीब ८ संस्थाओं ने विभिन्न सम्मानों से नवाजा है. आपसे विश्वकर्मा विद्या निकेतन, रावतसर-३३५५२४ पर पत्राचार किया जा सकता है

++++++++++++++++++++++++++++++++

बन्सीराम शर्मा

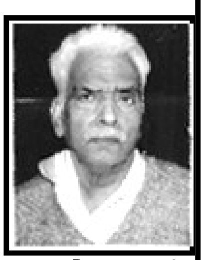

१७ फरवरी १६४६ को डी.जी.खान पूर्वी पाकिस्तान में जन्में श्री बन्सीराम शर्मा, स्नातक, पत्रकारिता डिप्लोमा करने के बाद सहायक संपदा अधिकारी, शहरी विकास प्राधिकरण, हुड्डा से सेवानिवृत हो चुके है.वर्तमान में संयुक्त निदेशक- श्री अंगिरा शोध संस्थान,जीन्द, संयुक्त सम्पादक अंगिरापुत्र मासिक है. आपकी खेल ही खेल में-लघुकथा संग्रह, आस्था के अंकुर,आस्था के फूल-काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके है. आपको विशिष्ट कवि, पुरस्कृत कवि, फैलोशिप, साहित्य कला विद्यालंकार, हिन्दी सेवी, समाज रत्न,लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड, हरियाणा काव्य गौरव, अक्षय साहित्य प्रतिभा, काव्य रत्न, साहित्य मनीषी, समाज रत्न सम्मान विभिन्न संस्थाओं से मिल चुके है. आप मित्र संगम पत्रिका के सह सम्पादक भी है. आपसे ३७८/७, प्रतापनगर, गुड़गांव-१२२००१ पर पत्रचार किया जा सकता है. तथा ६८११३६७०२१ पर कानाफुसी.

++++++++++++++++++++++++++++++++

सनातन कुमार वाजपेयी सेनातन

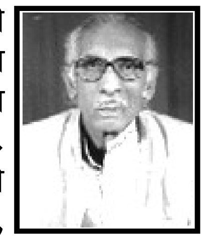

२१ अप्रैल १६३१ को जन्में श्री सनातन कुमार वाजपेयी की शिक्षा एम.ए.-हिन्दी,इतिहास, साहित्य रत्न कोविद तक हुई.आप सहा.जि.शा. नि.म.प्र. शासन से सेवानिवृत हो चुके है.गीत, गजल, कविता, लघुकथा, कहानी निबन्ध विधाओं में लिखते है. साकेत के स्वर-खण्ड काव्य, सुबोध गीता-श्री मद्शील हिन्दी पद्यमय अनुवाद, प्रकाशित कृतियां है. राष्ट्रीय स्तर पर अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित हो चुके श्री वाजपेयी पुराना कछपुरा स्कूल, गढ़ा, जबलपुर, ४८२००३, म.प्र. में निवास करते है. आपसे कानाफुसी-०७६१-२४२५१३७ पर हो सकती है.

++++++++++++++++++++++++++++++++

पं० मुकेश चतुर्वेदी 'समीर'

३० जून १६६१ सागर, म.प्र. में पं. श्रीकृष्ण चतुर्वेदी के पितृत्व व श्रीमती शान्ति चतुर्वेदी के मातृत्व में जन्में श्री समीर पेशे से नागरिक अभियंता है. ये गीत, ग़ज़ल, नज़्म, नई कविता, दोहे, मुक्तकबन्द, व्यंग्य समीक्षा, आलेख एवं संस्मरण विधा में लिखते है. अखिल भारतीय स्तर पर करीब दो दर्जन मानद उपाधियों एवं सैकड़ों सम्मानों से अलंकृत श्री समीर कई राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्टीय संकलनों, पत्र-पत्रिकाओं, स्मारिकाओं आदि में लगभग दो सौ से अधिक बार छप चुके है. आपसे २६७/१२८स/४, छोटी देवी, बाईसा मोहाल, नरयावली, नाका वार्ड, सागर म.प्र. ४७०००२ पर पत्राचार तथा ६६२६३५६५३३ पर कानाफुसी की जा सकती है

ग़ज़ल

फिर पुराने राग लेकर चल रही है जिन्दगी।
इक सुलगती आग लेकर चल रही है जिन्दगी।।
घाव कितने ही मिले पर वक्त ने सारे भरे।
जख्म के कुछ दाग लेकर चल रही है जिन्दगी।।
चेहरे पर चेहरा चढ़ाये लोग मिलते है यहां।
घृणा और अनुराग लेकर चल रही जिन्दगी।।
अपने अधिकारों की अब तो बात मत करिये यहां।
बस तपस्या-त्याग लेकर चल रही जिन्दगी।।
फिर सुबह से चल दिये हम रोटियों की खोज में।
सिर्फ भागम-भाग लेकर चल रही है जिन्दगी।।
दुश्मनों की क्या जरूरत दोस्तों का है करम।
आस्तीं में नाग लेकर चल रही है जिन्दगी।।

प्रमोद पुष्कर, भोपाल

नया साल मुबारक

देखाने लोग लगे ख्वाब सुनहरे लाखों,
फिर नये साल की झोली में है सपने लाखों।
आसमाँ, तुझपें पहुँचने की तमन्ना लेकर,
जानिबे-अर्श चले आज परिन्दे लाखों।
साल इस बार का हर बार से अच्छा होगा,
हमने देखो है इसी बात को कहते लाखों।
आदमीयत की हिफ़ाजत में कई है लेकिन,
आदमीयत का गला घोंटने वाले लाखों।
आज वो लोग अहिंसा की दुहाई देता,
जिनके दामन पे लगे खून के धब्बे लाखों।
आप सोचेंगे 'कूँवर' किसको हुआ क्या हासिल,
दौरे-हाज़िर को तो हासिल है करिश्में लाखों।

कूँवर कुसुमेश, लखनऊ

सबसे सुखी व्यक्ति बना दिया

श्याम ने अंजू से कहा-अंजू तुमने अपना प्यार देकर मुझे धरती का सबसे सुखी व्यक्ति बना दिया.

अंजू-बस धरती का, परसों जिस नौजवान से मेरी मुलाकात हुई थी. वह तो धरती और आसमान दोनों की ही बात कर रहा था.

++++++++++++++++++++++++++++++++++++

काव्यसंग्रह, निबंधसंग्रह,लघु कथा संग्रह व कहॉनी संग्रह हेतू रचनाएं आमंत्रित है

काव्य संग्रह हेतु-कवियों से दो रचनाएं, सचित्र जीवन परिचय तथा १००/-रुपये,
अथवा दस रचनाएं, सचित्र जीवन परिचय तथा ५००/-रुपये
निबध संग्रह हेतु-दो निबंध, अधिकतम पांच सौ शब्द, सचित्र जीवन परिचय सहित २५०/-रुपये
अथवा पॉच लेख, अधिकतम पांच सौ शब्द, सचित्र जीवन परिचय सहित १०००/-रुपये
लघु कथा संग्रह हेतु-दो लघु कथांए, अधिकतम दो सौ शब्द, सहयोग राशि २५०/-रुपये
अथवा पॉच लघु कथांए, अधिकतम दो सौ शब्द, सहयोग राशि ५००/-रुपये
कहानी संग्रह हेतु -एक कहानी, अधिकतम पॉच सौ शब्द, सचित्र जीवन परिचय तथा सहयोग राशि २५०/-रुपये
अथवा तीन कहानी, अधिकतम पॉच सौ शब्द, सचित्र जीवन परिचय तथा सहयोग राशि ५००/-रुपये

प्रेषण की अंतिम तिथिः ३० मार्च २००८

के साथ आमंत्रित है. अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए जवाबी टिकट लगे लिफाफे के साथ लिखें/भेजें-आप अपनी सहयोग राशि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी शाखा में खाता सं०:एस.बी. ५३८७०२०१०००६२५६ में भी जमा कर सकते है

प्रसार सचिव,
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी—93,नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद कानाफुसीः 9335155949

नागपाश की ग़ज़ल के कुछ अंश

ग़र सदी के ज़ख्म रिसते, बहते रहे,
तो तबीबों के नशतर हैं किस काम के
जो तबीबों की बदनीतियां पा चुके, वो
धड़ो पर धरे सिर है किस काम के
आग लगाई जाएगी, पिंजरा मुझको कहता है
फौज बुलाई जाएगी, क्यों पिंजरे में रहता है?
गुज़र गये इक़ मुलजिम को, तुम भी निकलो पिंजरे से
सज़ा सुनाई जाएगी, सूरज रोज निकलता है।

पंजाबी ग़ज़लों की एक झलक

चन्नां! ओहले-ओहले वस्सदें गिरां दस्स जा
किद्दां वस्सदी ऐ रावी ते झनां दस्स जा
किद्दा अद्धी-अद्धी मां वंडी गई दस्स जा
किद्दां वस्सदी ए मेरी अद्धाी मां दस्स जा
ढट्ठे खूह चों तैनू नूरपूरी वाजां मारदा
किहड़े किल्ले उत्ते बझ्झी मेरी गां दस्स जा

नागपाश, जालन्धर

++++++++++++++++++++++

एक लड़की

न जाने कितनी बार
टूटी है वो टुकड़ो-टुकड़ों मे
हर किसी को देखती
याचना की निगाहें से
एक बार तो हॉ कहकर देखो
कोई कोर कसर नहीं रखूँगी
तुम्हारी जिन्दगी संवारने में
पर सब बेकार
कोई उसके रंग को निहारता
तो कोई लम्बाई मापता
कोई उसे चलकर दिखाने को कहता
कोई साड़ी और सूट पहनकर बुलाता
पर कोई नहीं देखता
उसकी ऑखों में
जहॉ प्यार है, अनुराग है
लज्जा है, विश्वास है।

आकांक्षा यादव, कानपुर नगर

++++++++++++++++++++++

जीवन संदेश

सदा सच बोल पूरा तोल,
असली में नकली मत घोलं
क्यों हो रहा अन्धा ऑखे खोल
बज रहा सिर पर मौत का ढोलं
तज हेरा फेरी व्यर्थ मत डोल,
जीवन हीरा है अनमोल
इसे मिट्टी में मत रोल।।

देवराज आर्य मित्र, नई दिल्ली

++++++++++++++++++++++

आया वसंत

कोयल कूकी
फूली फुल वगिया
आया वसंत।
छेड़े अनंग
कसके अंग–अंग
घर न कंत।।
मन उड़ता
यादों के पंख लगा
दूर गगन।
मन व्याकुल
तुम को छू लेने की
लगी लगन।।
ढूढ़ रहा है
पी कहॉ पपिहरा
दिग दिंगत।।
बैरिनि होली
आई ले रंग रोली
करे ठिठोली
कसती बोली
फगुहारों की टोली
लगती गोली।।
तुम छू लेते
मिटती तन–मन
पीरा अनंत।।

डॉ0 महावीर सिंह, रायबरेली

++++++++++++++++++++++

होली

प्रेम के रंगो से तुम खेलो
होली का त्योहार
आपस में बस प्रेम बढ़ाओ
यही जीवन की धार
मैला, कचरा से मत खेलो
केवल रंग से खेलो
मन-मुटाव को पीछे छोड़ो
प्रेम की बोली बोलो

++++++++++++++++++

नववर्ष

नववर्ष पर हम सब बच्चे
यह आदर्श दिखायेंगे
खूब पढ़ेंगे मन लगाकर
बढ़िया नम्बर लायेंगे
नववर्ष पर हम सब बच्चे
यह भी कर दिखलाएँगे
खेलों में नाम कमाकर
दुनिया को बतलाएँगे
नववर्ष पर पापा-मम्मी
खूब हंसी खुशी मनाएँगे
बेटा-बेटी नाम करेंगे
वे गर्व से गर्दन तानेंगे

डॉ0नरेन्द्रनाथ लाहा,ग्वालियर, मप्र.

++++++++++++++++++++

गीत

मै सुगन्ध हूॅ चमन का
तुम भॅवरा बन कर आना
कलियों की महक लेकर
गलियों से फिर तुम जाना
सावन का महीना है
बरसात बनकर तुम आना
मैं भीगूं सारी रातो को
तुम वर्षा बनकर आना
जब मैं बनूँगा मुसाफिर
तुम राह बता जाना
जब मैं सुनाऊँ कविता
तुम गीत सुना जाना
जब मैं बनूँ बसंत बयार
तुम बसंती बनकर आना
तुम सुगन्ध हो चमन की
मै साहित्य का हूॅ दीवाना
जब मैं बनूँ दीवाना
तुम दीवानी बन कर आना।

दीवाना हिन्दुस्तानी, रीवा, म.प्र.

चिट्ठी आई है

साहित्य को आम आदमी तक पहुँचाने में प्रयासरत आप भी एक रत्न है

मुझे पॉचवे साहित्य मेले का आमंत्रण प्राप्त कर अत्यन्त हर्ष हुआ. प्रयागराज जैसा तीर्थराज और ऋषि मुनियों जैसे साहित्य सेवियों का सान्निध्य,एक अदभुत आनन्द की सृष्टि करते हैं. आम आदमी तक वर्तमान साहित्य पहुँच तो रहा है किन्तु समाचार-पत्र या दूरदर्शन द्वारा. पत्रिकाओं की संख्या विशाल हिन्दी महासागर में नगण्य हैं, और पुस्तकें तो और कम भी लोगों तक पहुँच पाती है. हिन्दी के तथाकथित महान साहित्यकारों की पुस्तकें भी कभी लाखों में नहीं छपी. नाम मात्र उनका हुआ जो जैसे-तैसे पाठ्य पुस्तकों में आ गए. शताधिक भी नहीं हैं. कबीर, रहीम, तुलसी, सुर, मीरा, जायसी को हमने उतना ही पढ़ा जितना परीक्षा में सफल होने के लिए जरुरी है. प्रसाद, पन्त, निराला, महादेवी को कौन, आम आदमी पढ़, समझ सकता है. बेशक! प्रेमचन्द को आम आदमी ने थोड़ा पढ़ा और फिल्मी पर्दे पर देखा भी. रेणु को लोग बस तीसरी कसम से ही जानते है. साहित्य को आम आदमी तक पहुँचाने के गत दशक से प्रयास शुरु हुए है. आप भी उसी श्रृंखला में एक रत्न है. आयोजन की सफलता की शुभकामनाएं.

डॉ० कमलेश शर्मा, भोपाल, म.प्र.

++++++++++++++++++++++++

आप हिन्दी के लिए बहुत कुछ कर रहे है.

साहित्य मेला की रुपरेखा वाला प्रपत्र मिला. मन गद्गद है. आप हिन्दी के लिए बहुत कुछ कर रहे है. अस्वस्थ न होता तो मेरा आना निश्चित ही था. लेकिन आपके कार्यक्रम की विराटता और सफलता के लिए प्रभु से प्रार्थना अवश्य ही कर रहा हूँ.

ज्ञानेन्द्र साज, संपादक, जर्जर कश्ती मासिक, अलीगढ़, उ.प्र.

++++++++++++++++++++++++

साहित्य मेला बड़ा ही सुखद व सराहनीय रहा.

१७ फरवरी को आयोजित साहित्यकार सम्मेलन बड़ा ही सुखद व सराहनीय रहा. साथ ही सबसे अधिक सराहनीय तो रहा आपका समर्पण. मैंने प्रारंभ से अन्त तक आपकी गतिविधियों पर नजर रखा रहा, आप अतिथियों के स्वागत-सत्कार में इतनी अच्छी भूमिका निभाई, जिसकी हम कितनी भी प्रशंसा करें कम है. आपने हमेशा हँसते मुस्तकराते हुए सपरिवार, अतिथियों को प्रेमरस से सरावोर भोजन करवाया. हर वक्त हर पल हर कार्य को संतुलित करते रहे. आपकी इस सेवा भाव से हम लोग बहुत प्रभावित है.

आपके द्वारा प्रत्येक वर्ष साहित्य सेवा के लिए किया जाने वाला यह सम्मान व सम्मेलन योजना नितान्त ही सराहनीय है. हम आपकी इस सेवा व समर्पण के लिये तहेदिल से आभारी है.

एम.कूमवंशी, पटकथा लेखक, गीतकार, शहडोल, म.प्र.

++++++++++++++++++++++++

पत्र की संपादन कला प्रशंसनीय है

जन०८ अंक मिला. पत्र की संपादन कला प्रशंसनीय है. जन्मसती के अवसर पर प्रस्तुत आलेख आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की निबन्ध कला एक समीक्षा, सुचिंतित है. लेखक सनातन कुमार गोस्वामी की कहानी नीम का पड़ पश्चिम के लेखक नाई दि सुवासॉ की कहानी कला नथिंग बट ट्रिक इंडिग की याद दिलाती है. कविताओं का स्तर ऊँचा है. सामग्रियां रुचिकर है. हर स्तर के पाठक पर संपादक महोदय का ध्यान, संपादक महोदय की सुखी दृष्टि का परिचायक है.

डॉ० स्वर्ण किरण, नालंदा, बिहार

++++++++++++++++++++++++

साहित्य के क्षेत्र में आपका प्रयास स्तुत्य है

पत्रिका मिली. सभी लेख, कविता, ग़ज़ल तथा कहानियां मनोरम और सुरुचिपूर्ण है. आपने 'अपनी बात' में वीआईपी सुरक्षा पर सामयिक कटाक्ष किया है. काश अदालत का निर्णय और आपकी प्रेरणा शासकों की आंखे खोल पाती! साहित्य के क्षेत्र में आपका प्रयास स्तुत्य है.

नन्द कुमार मनोचा 'वारिज', लखनऊ

++++++++++++++++++++++++

आप जैसे मनीषी ही देश हित को स्थायित्व दिशा दे सकेगें

आपकी साहित्यिक सेवा राष्ट्रीय स्तर पर हो रही है. यह सुखद विषय है. आप जैसे मनीषी ही देश हित और हिन्दी पत्रकारिता को स्थायित्व दिशा दे सकेगें. साथ ही ५ वॉ साहित्य मेला की सफलताओं की कामना के साथ

ओम प्रकाश त्रिवेदी, संपादक, साहित्य जनमंच, गाजियाबाद, उ.प्र.

++++++++++++++++++++++++

विश्व स्नेह समाज जैसी पत्रिका शायद ही देखने को मिलती है

माननीय श्रीयुत गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदीजी,
देश के सुविख्यात साहित्यकार-चिन्तक,
मनीषी, साहित्यकारों के मसीहा
सस्नेह सादर नमन!

पत्रिका दिसम्बर ०७ अंक मिला.आपकी कृपा के प्रति आभारी है. आपके विलक्षण ज्ञान-अनुभव और प्रतिभा का आयना विश्व स्नेह समाज है. चार कहॉनियां पढ़ी. तीर्थराज प्रयाग इतिहास के आईने में तथा जब जामा मस्जिद से वेदमंत्र गूंजा था. समचमुच अपने आप में अनूठे है. हिपेटाइटिस रोग से कैसे बचे बेहतर है. विश्व स्नेह समाज जैसी पत्रिका शायद ही देखने को मिलती है. मेरी बधाई शुभकामना स्वीकारें.

डॉ० रामसिंह यादव, अध्यक्ष मध्य प्रदेश जर्नलिस्ट एसोसिएशन, उज्जैन, म.प्र.

++++++++++++++++++++++++

नये साल का
नया सूरज

यश और वैभव की
स्वर्णिम रश्मियों से
आलोकित करता रहे
अनवरत
आपके पथ को।

बृज बिहारी ब्रजेश,मोहम्मदी खीरी, उ०प्र०

+++++++++++++++++++++++

जनवरी०८ अंक मिला. यह अंक पिछले अंको से अधिक आकर्षक और रोचक है. सम्पादकीय के साथ-साथ न्यूज चैनलों पर अपराध का महिमामंडन, झांसी से प्रेरणा ली थी सुभाष ने और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबन्धकला ने अत्यधिक प्रभावित किया. कविताओं के साथ-साथ अन्य रचनाएं भी अच्छी लगी. सभी काव्य रचनाएँ अगर एक ही जगह प्रकाशित होती तो पत्रिका के अन्तः सौन्दर्य के लिए और भी अच्छा होता. मंगलमयी शुभ कामनाओं के साथ.

राजीव नयन तिवारी, बाका

+++++++++++++++++++++++

पत्रिका का जनवरी ०८ का अंक मिला. इसमें आपने व्यक्तित्व में मेरा परिचय प्रकाशित किया, इस हेतु आभारी हूँ.

डॉ.बाबू लाल वत्स, आगरा

+++++++++++++++++++++++

आदरणीय बन्धुवर,
नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं
नये साल में नई बात हो
खुशियों का ही संग साथ हो
मिटे आतंकवाद पूरे विश्व से
घर दीवाली सी हर रात हो।

डॉ० वेद प्रकाश प्रजापति 'अंकुर',
नैनीताल, उत्तरांचल

+++++++++++++++++++++++

पत्रिका का नवम्बर ०७ अंक मिला. सद्यः अंक, नामानुकूल सामग्री, निर्भीक, सटीक, इन्द्रधनुषीय पठनीय स्तम्भों में चयन, सम्पादन कला की विशेषता. हिन्दी लेखन के प्रति जागरुक पत्रिका, स्वास्थ्य विज्ञान विषयक खोजपूर्ण लेखों की भी अपेक्षा है. स्तुत्य प्रयास, श्रम हेतु बधाई तथा प्रकाशन निरन्तरता के क्रम में प्रभु से प्रार्थना.

श्री द्विवेदी सम्मानित

हिमालय और हिन्दुस्तान के १५वें वार्षिकोत्सव पर हिमालय और हिन्दुस्तान मल्डीमिडिया नेटवर्क एवं हिमालय और हिन्दुस्तान पाठक मंच द्वारा २९/३० दिसम्बर ०७ को ऋषिकेश, देहरादून में आयोजित दो दिवसीय चतुर्थ राष्ट्रीय हिमालय और हिन्दुस्तान ज्योतिष-आयुर्वेद एवं पत्रकार, साहित्यकार सम्मेलन एवं प्रतिभा प्रोत्साहन/सम्मान समारोह आदि में सहयोग मार्ग एवं मार्गदर्शन हेतु सम्मानित किया गया.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी मीडिया सलाहकार मनोनित

हिमालय और हिन्दुस्तान क्रिएटीव एवं मल्टीमीडिया ग्रुप ने राष्ट्रीय हिंदी मासिक 'विश्व स्नेह के संपादक व विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के सचिव गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी को एडवाईजरी बोर्ड का मीडिया सलाहकर मनोनित किया है. साहित्यकारों ने श्री द्विवेदी को मीडिया सलाहकार मनोनित होन पर बधाई दी.

मङ्लप्रद रहे.

श्रीमती प्रमुग्धा भटनागर,कोटा, राजस्थान

+++++++++++++++++++++++

पत्रिका मिली. सभी लेख, कविता, ग़ज़ल तथा कहानियां मनोरम और सुरुचिपूर्ण है. आपने 'अपनी बात' में वीआईपी सुरक्षा पर सामयिक कटाक्ष किया है. काश अदालत का निर्णय और आपकी प्रेरणा शासकों की आंखे खोल पाती! साहित्य के क्षेत्र में आपका प्रयास स्तुत्य है.

नन्द कुमार मनोचा 'वारिज', लखनऊ

+++++++++++++++++++++++

उसके ही लफ़्ज़ों से फैली,
हर सू देखो खुशहाली है
कविता को पाकर के उसने,
इंक दौलत सी पाली है
कैसे छोड़े कविता करना,
कविता उसकी
दीवाली है
चेहरे पे
मौजूद यकीनन,
कुछ
शोहरत की भी लाली
है
दुनिया की नज़रों में
लेकिन,
मुरख और मवाली
है
आज किसी को कवि कह देना
सबसे ऊंची गाली है

महाविदुषी डॉ० बुद्धिराजा के जन्मपर विशेष-
वसुन्धरा है ये अनूठी, हरीतिमा है, रंग है
बुद्धिराजा ही यथोचित, कर्म के अनुसंग है
शुभकामनायें,दे रहा हूँ सर्वसुख कल्याण की
है नमन मेरा सदा ये अक्षरों की गंग है

मुकेश चतुर्वेदी, सागर, म.प्र.

+++++++++++++++++++++++

सम्मानित पाठक बन्धु

आपके स्नेह की बदौलत ही हम सफलता के छह वर्ष पूर्ण करने में सफल हुए है. आप अपनी शिकायतों व सुझावों से हमें अवगत कराते रहे ताकि पत्रिका में निखार लाने में हमें मदद मिल सके. हम आपकी शिकायतों/सुझावों पर विशेष ध्यान देते हैं.

संपादक

हिमालय और हिन्दुस्तान की १५वीं वार्षिक अधिवेशन में साहित्य, आयुर्वेद, ज्योतिष की प्रतिभाएं सम्मानित

राष्ट्रीय हिन्दी पाक्षिक हिमालय और हिन्दुस्तान की १५वीं वर्षगांठ के सुअवसर पर हिमालय और हिन्दुस्तान क्रिएटीव एंड मल्टीमीडिया ग्रुप द्वारा दो दिवसीय चतुर्थ राष्ट्रीय ज्योतिष–आयुर्वेद एवं पत्रकार साहित्यकार सम्मेलन व सम्मान प्रतिभा प्रोत्साहन समारोह का आयोजन २६ व ३० दिसम्बर २००७ को किया गया.

प्रथम दिन हिमालय और हिन्दुस्तान के संरक्षक व ज्योतिषाचार्य राणा इन्द्रसिंह की अध्यक्षता में ज्योतिष व आयुर्वेद सम्मेलन हुआ. मुख्य अतिथि रहे भारतीय आयुर्वेद विकास एवं विश्व विज्ञान शोध संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष वैद्यराज गंगाधर द्विवेदी. भारतीय आयुर्वेद विकास एवं विश्व विज्ञान शोध संस्था, जैनपुर एवं आयुर्वेद विकास एवं विश्व विज्ञान शोध संस्था दिल्ली के संयुक्त सत्र में वक्ताओं ने आयुर्वेद व ज्योतिष के विकास व शोध पर चर्चा की.

दूसरे दिन प्रातः दस बजे पत्रकार सम्मेलन क्राइम फ्री इन्डिया ब्यूरो दिल्ली के डायरेक्टर डॉ० जसवीर आर्य की अध्यक्षता में शुरु हुआ. उत्तराखंड एडीटर्स एसोसिएशन व भारतीय अंशकालिक पत्रकार महासमिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित पत्रकार सम्मेलन में उ.ए.ए. के प्रदेश उपाध्यक्ष जगदीश एम.विकल ने सम्पादकों व समाचार पत्र, पत्रिकाओं के हितो व अधिकारों पर चर्चा की. भा.अं.प.म. के राष्ट्रीय अध्यक्ष वैद्यराज गंगाधर द्विवेदी ने कहा–'अंशकालिक पत्रकार पूर्ण कालिक पत्रकारों की भाँति कार्य करते है. फिर भी उनकी उपेक्षा व शोषण किया जाता है.' इस अवसर पर डॉ.राजेन्द्र गैरोला, श्रीमती मीरा रतूड़ी, केसर सिंह आबाद, योगेश शर्मा, डॉ. नारायण सिंह रावत, श्रीमती सन्तोष आनन्द तथा नरेन्द्र रस्तोगी ने भी अपने विचार रक्खें. सम्मेलन में सूचनाधिकार में मीडिया की भूमिका विषय पर भी चर्चा हुई.

३० दिसम्बर का दूसरा सत्र रॉयल इण्डिया मोशन पिक्चर्स प्रोडूसर एसोसिएशन के चेयरमैन जे.के. गुप्ता की अध्यक्षता में हुआ. जिसमें राष्ट्रीय स्तर पर हिमालय और हिन्दुतान एवार्ड २००७ डॉ० प्रणव पंडया, हरिद्वार, स्वामी वासुदेवानन्द तीर्थ–पुणे, गोपाल अग्रवाल–लखनउ, आचार्य शरद कुमार साधक–वाराणसी, महन्तगिलोक गिरी–जोधपुर, योगी भंवर लाल वैद, डॉ.अशोक कुमार आर्य–अमरोह, योगीराज, माधवदास ममतानी–नागपुर, योगेश कुमार धीर–मेरठ, ठाकुर बाबा–उड़ीसा, जगतगुरु जगन्नाथ दास–जम्मू, सुश्री अंशुसिंह रुड़की, डॉ० अशोक आर्य–फरीदाबाद, बालसन्त रामेश्वर–हरिद्वार को प्रदान किया गया. ज्योतिष क्षेत्र में उदय डी.भट्ट–बलसाड़, डॉ.संजीव अग्रवाल वास्तुविद–मेरठ, डॉ. एस.एस.गोल–दिल्ली, गोपाल राजू–रुड़की, पं. सतीश कुमार पांचाली–माधोपुर, दयानन्द शास्त्री–राजस्थान, समाज सेवा के क्षेत्र में पर्यटन मंत्री उत्तराखंड प्रकाश पन्त, डॉ.के.एन.पाण्डेय–दिल्ली, कर्नल तेजेन्द्र पाल त्यागी–गाजियाबाद, डी.पी. वरुण–लखनऊ, अजय प्रकाश बड़ौला–उत्तर काशी, सांसद एन.डी. राय, श्रीमती पार्वती बड़ौला, श्रीमती सविता गुप्ता–देहरादून, डॉ.वी.एस.चौधरी व डॉ.वी.के.दूबे–जबलपुर, आयेर्वद के क्षेत्र में डॉ.एन.एन.लाहा, डॉ. एम. एल.सुथार, डॉ.सुरेन्द्र विजय शुक्ला, डॉ. मधु जैन, ब्रजेश गर्ग, वैद्यराज गंगाधर द्विवेदी, आचार्य प्रभाकर मिश्र,डॉ०एस.के.पाण्डेय,शिक्षा के क्षेत्र में जगदीश गांधी तथा डी.पी. बछेती, पत्रकारिता, साहित्य के क्षेत्र में सेवाशंकर अग्रवाल–छत्तीसगढ़, शंकर झकनाड़ियाा, डॉ०कमलेश शर्मा, डॉ० शरद नारायण खरे, डॉ० लज्जा देवी, सी.एल.सत्यार्थी, राम बसल, महावीर रावांल्टा, डॉ. एम.आर.सकलानी, हरीश चन्द्र आर्य, योगम्बर सिंह बर्तवाल, आशाराम गौतम, सत्यवीर अग्रवाल, अरुण अग्रवाल–इलाहाबाद, राजेन्द्र तिवारी, डॉ० मुकीम मुमताज, जगदीश एम विकल, नरेन्द्र रस्तोगी, डॉ०वेद व्यथित सहित फिल्म, संस्कृति व संगीत के क्षेत्र में प्रतिभाएं सम्मानित हुई. उक्त जानकारी डॉ० रवि रस्तोगी, हिमालय और हिन्दुस्तान के संपादक डॉ० रवि रस्तोगी ने दी.

अनुराग मिश्र मीडिया प्रभारी

भारतीय जनता पार्टी अवध क्षेत्र के अध्यक्ष श्री जयपाल सिंह ने अनुराग मिश्र को अवध क्षेत्र का मीडिया प्रभारी नियुक्त किया है. श्री मिश्र के मीडिया प्रभारी नियुक्ति होने पर भारतीय जनता पार्टी महानगर लखनऊ के नगर उपाध्यक्ष अतुल दीक्षित, पूर्व नगर महामंत्री हीरो बाजपेई, विधि प्रकोष्ठ के पूर्व नगर उपाध्यक्ष शेखर निगम, सभासद त्रिलोक सिंह अधिकारी व नागेन्द्र सिंह ने हार्दिक बधाई दी.

पॉच वीरांगनाएं

श्री राजेन्द्र रज्जन उर्फ आर.पी.सक्सेना एक अच्छे साहित्यकार थे, जिनकी मार्मिक रचनाऐं खण्ड काव्यगजल, कविता, कुण्डलियों के रुप में काव्य गोष्ठियों में उनके द्वारा सुनने का अवसर मिला.भारत की पॉच वीरांगनाए उनकी नवीनतम कृति है जिसे उनके पुत्र गगन सक्सेना ने प्रकाशित करवाया है. यह संग्रह स्वतंत्रता में अमूल्य योगदान देने वाली झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, वीरांगना अवन्ति बाई, वीरांगना अहिल्या बाई रानी दुर्गावती, रजिया सुल्तान पर लिखी गई है.

फौज चीरती रानी जाती, बनके काली का अवतार।
गोरी सेना को वो काटे, रूके नहीं उसकी तलवार।।

++++++++++++++++++++++++++++++++

अंग्रेजी सब अफसर भागे, कांप उठी सभी दिशायें थी,
डोल उठी धरती सिवनी की, दिल गोरों के थर्राये थे,
बैठ अश्व नेतृत्व करे वो, गोली तोपों के साये,
औ लिखती जाये नारी के, साहसकी अमर कहानी।
स्वतंत्रता की बलिवेदी पर, दी कितनों ने कुर्बानी

++++++++++++++++++++++++++++++++

युद्ध भूमि में स्वागत करने हम तैयार कि आते है,
नहीं जान डरपोक हमें हम भी हर हाल मराठे हैं,

रचनाकारः आर.पी.सक्सेना, राजेन्द्र रज्जन
प्रकाशकः भवभूति शोध संस्थान, विमल कुटीर, बुजुर्ग रोड, डबरा, जिला-ग्वालियर, म.प्र. **मूल्यः** २५ रुपये

++++++++++++++++++++++++++++++++

उपहारमयी सनातन देव-संस्कृति

हमारी भारतीय संस्कृति सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया. सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिदुः खभाग्भवेत। की परिपालक रही है. लेकिन आज हम अपनी संस्कृति को भूलते जा रहे है. ऋषि मुनियों ने हमेशा परोपकार की भावना के लिए जप-तप किए है. स्वहित के लिए नहीं. ऐसी मनोभावों को लेकर लिखी गयी यह पुस्तक वास्तव में ज्ञानबर्द्धक है-

सर्वभूतेषु चालानं सर्वभूतानि चात्मनि। समं पश्यन्नात्मजायी स्वराज्यमधिगच्छति।। (मनु१२/६१)

मनुस्मृति गर्भाधान से लेकर परलोक गमन के बाद तक के समस्त आचार-विचार एवं कर्म-धर्म को निर्धारण करने वाला सृष्टि का प्रथम आचार ग्रंथ है.

++++++++++++++++++++++++++++++++

जो कर्म जीवन को संस्कारित करके प्राणी को ईश्वरोन्मुख बनाये रखे एवं सत्कर्मो में संलग्न रखें, उसे ही संस्कार कहते है. ऐसे ही संस्कारमय कर्म सदाचार कहे जाते है।

++++++++++++++++++++++++++++++++

उत्तम संतान ही संस्कारों एवं सचादारों का पालन किया करती है इसी कारण वैदिक-काल में गोत्र-परम्परा, गुरु शिष्य परम्परा तथा कुल परम्परा की प्रधानता थी. शास्त्रों में इसी कारण समाज के किसी भी वर्ग को, किसी भी जाति विशेष को 'दलित' या अस्पृश्य नहीं कहा जाता था. पिता-पितामह के द्वारा बताए गए मार्ग पर चलकर ही दुःखों एवं अभावों से मुक्ति मिलती है.

++++++++++++++++++++++++++++++++

ज्ञान के तीन प्रमुख स्रोत है-माता, पिता और गुरु. कहा गया है-'मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव. इनके निष्काम सेवा से ही ज्ञानार्थी को समस्त ज्ञान प्राप्त हो जाते है. समस्त संस्कारों से संस्कारित होकर गुरुजनों को नमन, सेवा करने से यश, विद्या, आयु, धन आदि प्राप्त होते रहते है.

लेखकःडॉ० सुरेश नन्दन प्रसाद सिंह, डॉ० रमांशकर पाण्डेय
प्रकाशकः डॉ० मुरारी लाल अग्रवाल, सतयुग प्रकाशन, ३४, मधुवन, अलवर- **मूल्यः** ३० रुपये

समीक्षकः गोकलेश्वर कुमार द्विवेदी

साहित्यकारों/सदस्यों के लिए

१.पत्रिका के लिए लेख अथवा प्रकाशन सामग्री कागज के एक ओर बायी तरफ पर्याप्त हाशिया छोड़कर स्पष्ट सुन्दर अक्षरों में लिखकर अथवा टाईप कराकर दो पंक्तियों के बीच में समुचित स्थान के साथ भेजें. किसी भी उद्धरण का पूरा सन्दर्भ अवश्य दें. रचना की वापसी के लिए टिकट लगा लिफाफा भेजना न भूलें. २.किसी पर्व/अवसर विशेष पर सामग्री दो माह पूर्व भेजें. ३.पत्रिका के सदस्य पत्रव्यवहार व धनादेश भेजते समय सदस्य संख्या का उल्लेख अवश्य करें.४.हम साहित्यकारों को फिलहॉल कोई मानदेय नहीं देते. केवल उपहार स्वरूप दो प्रतियॉ ही भेजते हैं जिसमें उनकी रचनाएँ छपी होती हैं. भविष्य में कुछ मानदेय देने की योजना विचाराधीन हैं. लेकिन वह मांगी गयी सामग्री पर ही देय होगी. ५.यदि आप अपनी कृति (काव्य, ग़ज़ल, कहानी, निबंध संग्रह, उपन्यास) का विज्ञापन इस पत्रिका में छपवाना चाहते हैं तो रु० १००/-का मनिआर्डर तथा एक प्रति पुस्तक की भेजें. ६.धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/डी.डी 'संपादक, विश्व स्नेह समाज' के नाम से भेजें. चेक स्वीकार्य नहीं होगा. सदस्यों को चाहिए कि अपना डाक पता स्पष्ट सुन्दर अक्षरों में लिखें.

अल्ट्रसाउंड से गर्भस्थ शिशु को खतरा

गर्भ में पल रहे भ्रूण के मस्तिष्कीय विकास के क्रम में अल्ट्रासाउंड का बुरा असर पड़ सकता है. बच्चे के जन्म के बाद जब मस्तिष्क का विश्लेषण किया गया तो उसमें देखा गया कि कुछ विशेष मस्तिष्कीय कोशिकाएँ अपने सामान्य स्थान से उपयुक्त स्थान तक नहीं पहुंच पाई.

गर्भावस्था के दौरान अल्ट्रासाउण्ड करवाना गर्भस्थ शिशु के लिए खतरनाक साबित हो सकता है. खासतौर पर गर्भ में पल रहे भ्रूण के मस्तिष्कीय विकास के क्रम में अल्ट्रासाउंड का बुरा असर पड़ सकता है. यह निष्कर्ष हाल ही में वैज्ञानिकों द्वारा किए गए एक अध्ययन में सामने आया है.

वैज्ञानिकों ने इसे चूहों पर प्रयोग किया है तथा कहा है कि मनुष्यों पर इन निष्कर्षो का लागू करना फिलहाल सही नही होगा. उल्लेखनीय है कि कनेक्टीकट के न्यू हैवन स्थित येल मेडिकल स्कूल के पैस्कों रैकिक और उनके सहयोगियों ने इससे संबंधित अध्ययन किया है. इस अध्ययन में चूहों के विकसित हो भ्रूण पर प्रयोग किया गया है. वैज्ञानिकों ने एक रसायन का उपयोग करते हुए इन भ्रूणों के मस्तिष्कीय विकास का अध्ययन किया है. इन रसायन के प्रयोग के तुरंत बाद भूण को अल्ट्रासाउंड से गुजारा गया. गर्भावस्था के तीसरे सप्ताह में यह प्रयोग किया गया था.

यह समय भ्रूणों में मस्तिष्कीय कोशिकाओं के विकास का सर्वाधिक उपयुक्त समय होता है. बच्चे के जन्म के बाद जब मस्तिष्क का विश्लेषण किया गया तो उसमें देखा गया कि कुछ विशेष मस्तिकीय कोशिकाएँ अपने सामान्य स्थान से उपयुक्त स्थान तक नहीं पहुँच पाई है. उदाहरण के तौर पर ६ प्रतिशत कोशिकाएँ जिन पर रसायन का प्रयोग किया गया था, अपने सामान्य स्थान से विकसित स्थानों पर नहीं पहुँच सकी. इन चूहों के भ्रूण पर ३० मिनट के दो अल्ट्रासाउंड प्रयोग किए गए. रैकिक ने बताया कि अल्ट्रासाउण्ड तरंगो द्वारा किसी तरह इन कोशिकाओं के बीच गलत प्रभाव छोड़ा गया.

चिकित्सकों द्वारा आमतौर पर गर्भावस्था के दौरान भ्रूण विकास की जांच करने के लिए कम से कम दो अल्ट्रासाउंड करवाने के लिए कहा जाता है. प्रत्येक अल्ट्रासाउंड ३० मिनट की अवधि का होता है. अल्ट्रासोनिक तरंगो के लिए बनाए गये ग्राम के अध्ययन से गर्भस्थ शिशु की उम्र, उसकी अवस्था तथा जैविक असमानताओं के बारे में जानकारी हासिल की जाती है.

स्वर्ग विभा वेबसाइट पर रचनाएं आमंत्रित

www.swargvibha.tk जाल पर उच्च स्तरीय, मौलिक एवं अप्रकाशित रचनाएं (कविता, गज़ल, हाइकु, गीत, लघुकथा, मुक्तक, शेर, पुस्तक समीक्षा आदि) निःशुल्क प्रकाशनार्थ सादर आमंत्रित है. यह वेबसाइट साहित्यकारों को उत्साहित करने एवं हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से, स्वर्ग विभा टीम द्वारा डॉ. श्रीमती तारा सिंह, मुंबई के सरंक्षण में शुरु किया गया है. रचनाएं यूनीकोड अथवा अंग्रेजी में टंकित कर swargvibha@gmail.com पर भेजी जा सकती है. नवोदित रचनाकारों को प्राथमिकता दी जाएगी. साल २००८ से सर्वश्रेष्ठ युवा रचनाकारों को पुरस्कृत करने की भी योजना है. आप सबों के सहयोग एवं सुझाव की अपेक्षा रहेगी.

डॉ. बी.पी.सिंह
(स्वर्ग-विभा टीम की ओर से)
बी-६०५, अनमोल प्लाजा, से०८, खारघर, नवी मुंबई-४१०२१०

सदस्य/पदाधिकारी बनें

मतदाताओं के हितों व अधिकारों की रक्षा हेतु कार्यरत गैर राजनैतिक संगठन ऑल इण्डिया वोटर्स राईट्स एण्ड वैलफेयर एसोसिएशन के सदस्य एवं पंचायत स्तर से राष्ट्रीय स्तर तक सलाहकार सरंक्षक एवं पदाधिकारी बनने हेतु सम्पर्क करें. सदस्यता निःशुल्क, सदस्यता परिचय पत्र हेतु दस रुपये तथा पदाधिकारी परिचय पत्र हेतु 100 रुपये देकर प्राप्त करे।

डॉ० रवि रस्तोगी, संस्थापक एवं केन्द्रीय अध्यक्ष
ऑल इण्डिया वोटर्स राईट्स एण्ड वैलफेयर एसोसिएशन
द्वारा हिमालय और हिन्दुस्तान समाचार पत्र कम्युनिटी सेन्टर, आई.डी.पी.एल. के सामने, वीरभद्र (ऋषिकेश) २४९२०२,देहरादून, उत्तराखंड
मो०९८९७३४००६७

सफलता के आठ वर्ष पूर्ण करने की ओर तेजी से अग्रसित

स्वयं भी पढ़ें और अपने परिचितों को भी पढाए

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

लोकप्रिय राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

'विश्व स्नेह समाज' के पाठकों को विशेष तोहफा. घर बैठे प्राप्त करें वर्ष भर में १२ अंक अपनी प्रिय मासिक पत्रिका

एक प्रति:रु०५/– **विशिष्ट सदस्य**:रु० १००/– **द्विवार्षिक सदस्यता**:रु०११०/– **पंचवर्षिय सदस्यता**:रु०२८०/– **आजीवन सदस्य**:रु०११०१/– **संरक्षक सदस्य** :रु० २५००/–

☞विशिष्ट सदस्यों का संचित्र संक्षिप्त परिचय एक बार प्रकाशित किया जाएगा.

☞आजीवन सदस्यों का पूर्ण जीवन परिचय सचित्र एक बार तथा प्रत्येक वर्ष 2/3का विज्ञापन/संदेश निःशुल्क प्रकाशित किया जाएगा.

☞संरक्षक सदस्यों का एक बार पूर्ण जीवन परिचय, प्रत्येक वर्ष 2/3 का विज्ञापन/संदेश निःशुल्क प्रकाशित किया जाएगा तथा उपहार स्वरुप प्रत्येक वर्ष अलग से 200रु0 तक की पुस्तकें भेंट की जाएगी.

सदस्यों के लिए महत्वपूर्ण सूचना

सभी सदस्यों से निवेदन है कि अपनी सदस्यता राशि समय पर भेजकर नवीनीकरण कराते रहें. कृपया पता परिवर्तन की सूचना अवश्य भेजें. सही पते के अभाव में कई बार पत्रिका लौटकर वापिस आ जाती है. हमें नवीनतम पता, फोन नम्बर, मोबाइल नं. के साथ शीघ्र ही प्रेषित करने का कष्ट करें. पत्रिका के प्रथम पृष्ठ पर अंक की संख्या लिखी होती है. अतः जिस संख्या का अंक नहीं मिला हो उसकी सूचना दो माह के भीतर अपनी ग्राहक संख्या लिखकर भेजें ताकि पुनः अंक प्रेषित किया जा सके. **कृपया सदस्यता राशि, संपादक, विश्व स्नेह समाज के नाम निम्न बैंक खाते में जमा कराके हमें पे स्लिप की फोटो कापी भेजनें का कष्ट करें.**

विजया बैंक : 718200300000104

विशेष सदस्यता योजना में भाग लीजिए, अपने नाम, पता के साथ निम्न पते पर भेजें-

संपादक, 'विश्व स्नेह समाज',

एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११

पंजी. सं.:

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

सम्पर्क स्थलः एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
कानाफुसी-9335155949 **email**: sahityaseva@rediffmail.com

क्रमांक.............

सदस्यता आवेदन–पत्र

दो फोटो लगायें

सदस्य का नाम : ....

पिता का नाम :...जन्म तिथि ....

शैक्षिक योग्यता :...

लेखन/पत्रकारिता का अनुभव :...

मुख्य व्यवसाय : ....

कार्यक्षेत्र :...

स्थायी पता ग्राम/मोहल्ला :...

....

पत्र–व्यवहार का पता :...

सदस्यता शुल्क का विवरणः...

अन्य साहित्यिक संगठन जिससे आप जूड़ें हुए हों :...

....

आप हिंदी की किस प्रकार सेवा करना चाहते हैं: ....

दिनांक .... हस्ताक्षर सदस्य ....

सदस्यता के नियम

१. कोई भी व्यक्ति जो हिंदी सेवी हो या हिंदी में अभिरुचि रखता हो संस्थान की सदस्यता ग्रहण कर सकता हैं.

२. सदस्यता श्रेणी निम्न प्रकार निर्धारित की गई है. **साधारण सदस्य**-५०/-रुपये मात्र, **स्थायी सदस्यः २५०/-वार्षिक, विशिष्ट सदस्य**-१००/-मात्र, **आजीवन सदस्यः** ५००/रुपये. **सरंक्षक सदस्यः** ११००/-रुपये मात्र

३. साधारण व विशिष्ट सदस्यता सदस्यता ग्रहण की तारिख से दिसम्बर २०१० तक के लिए मान्य होगी. विशिष्ट सदस्यों को विश्व स्नेह समाज मा. पत्रिका एक वर्ष निःशुल्क भेजी जाएगी

४. स्थायी सदस्य ही कार्यसमिति सदस्य, पदाधिकारी का चुनाव लड़ सकते है. जो प्रत्येक वर्ष अगस्त माह में लोकत्रांत्रिक प्रक्रिया के तहत सम्पन्न होता है.

५. आप स्वेच्छा से साहित्य कोष के लिए १ रुपये से लेकर १०००००००००....../-रुपये तक जो भी आपकी सामर्थ्य हों देकर कोष की श्रीवृद्धि में मदद कर सकते हैं. आपके द्वारा दी गयी धनराशि विश्व हिंदी साहित्य कोष में रक्खा जाएगा. जिसका प्रयोग स्नेहाश्रम, साहित्यिक आयोजनों, निर्धन साहित्यकारो की पुस्तकों के प्रकाशन पर किया जाता है. इसका ब्योरा कोई भी सदस्य दस रुपये का डाक टिकट लगाकर, अपनी सदस्य संख्या का उल्लेख करते हुए प्राप्त कर सकता है.

कृष्ण किशोर तिवारी

निदेशक,
ए.सी.सी.प्राइवेट लि0,(सदस्य, ब्लाईण्ड एसाइलम)

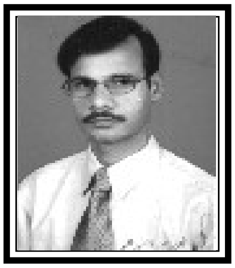

के असामयिक निधन पर हम हार्दिक शोक प्रकट करते हैं.

रेवा नन्दन द्विवेदी

संयुक्त सचिव(सिविल इंजीनियर)

द स्कूल होम फॉर द ब्लाइण्ड

(अंधा खाना, नैनी),जेल रोड पावर हाउस, मिर्जापुर रोड, नैनी, इलाहाबाद,

सभी नगर वासियों को रंगों के त्योहार होली की हार्दिक बधाईयां

श्रीमती मीरा जायसवाल

पत्नी विजय जायसवाल
सभासद वार्ड 9
नगर पालिका परिषद गौरा बरहज, देवरिया

प्रकाशन हेतु सम्पर्क करें

अपने काव्य संग्रह, कहॉनी संग्रह, आलेख संग्रह आदि प्रकाशन हेतु संपर्क करें.

विशेष आकर्षण: १.मात्र लागत मूल्य पर २.विक्री की व्यवस्था
३. प्रचार प्रसार की व्यवस्था ४. विमोचन की व्यवस्था

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें:

प्रचार सचिव
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

पॉचवा साहित्य मेला अपार सफलता के साथ सम्पन्न

कैमरे की नजर में साहित्य मेला–२००८